bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 सितम्बर प्रथम अंक – 03

वर्तमान कमल ज्योति

स्वार्थ साधना की आंधी में वसुधा का कल्याण न भूलें...

₹20

उत्तर प्रदेश से राज्य सभा सदस्य के लिए नामांकन करते डॉ0 दिनेश शर्मा जी

भारतीय जनता युवा मोर्चा की बैठक लखनऊ

महिला मोर्चा द्वारा सेल्फी विद लाभार्थी अभियान की बधाई

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह

सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार

प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह

पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email- bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

अभिनन्दन, बधाई

हम, भाजपा कार्यकर्ता, 9-10 सितंबर, 2023 को नई दिल्ली में आयोजित सफल G20 शिखर सम्मलेन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भारत सरकार की सराहना करते हैं और उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं। हम शिखर सम्मलेन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए नेतृत्व और उनकी अटूट प्रतिबद्धता पर गर्व करते हैं। G20 दिल्ली शिखर सम्मलेन भारत के राजनयिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में जुड़ गया है, यह एक परिवर्तनकारी क्षण है जिसके नजरिये से वैश्विक मंच पर अब हमारे राष्ट्र को देखा जाएगा।

भारत में आयोजित G20 शिखर सम्मलेन ने आर्थिक, जियो पॉलिटिक्स, टेक्नोलॉजी जैसे कई अहम वैश्विक विषयों पर पूरी दुनिया को एक मंच पर लाने का काम किया। हम एक व्यापक और दूरदर्शी G20 नई दिल्ली घोषणा पत्र सुनिश्चित करने के लिए पीएम मोदी के प्रयासों की सराहना करते हैं। यह घोषणा पत्र हमारी दूरदर्शिता का प्रमाण है, जो हमारे वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ का कार्य करेगी।

इस सम्मलेन में हुई व्यापक वैश्विक भागीदारी को देखकर हमें अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हुई है। यह अद्वितीय है और अभूतपूर्व भी, जो भारत की क्षमताओं और दूरदर्शी दृष्टिकोण में विश्व के विश्वास की पुष्टि करती है। इससे भारत की क्षमता और प्रधानमंत्री मोदी के प्रभावी नेतृत्व में दुनिया का विश्वास भी प्रमाणित हुआ है।

हम विगत वर्षों में अपनाए गए पारंपरिक GDP-केंद्रित विकास पथ से आगे बढ़ते हुए, दुनिया को विकास का एक मानव-केंद्रित मॉडल दिखाने के लिए पीएम मोदी की सराहना करते हैं। स्थिरता, समावेशिता और साझा समृद्धि पर जोर देने वाला यह मॉडल, G20 शिखर सम्मलेन में भाग लेने वाले देशों के बीच गहराई से प्रतिध्वनित हुआ, जिसने मानवता की सामूहिक भलाई के लिए एक पुरोधा के रूप में भारत के रुख को प्रमुखता से स्थापित किया है। भारत डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) और मिशन LiFE जैसे प्रतिमानों की वकालत करने में भी सबसे आगे रहा, जो वैश्विक नीति निर्माताओं को उनकी पारस्परिक नीतियां बनाते समय मार्गदर्शक का काम करेंगे।

आने वाली पीढ़ियां G20 शिखर सम्मेलन, 2023 को एक ऐसे सम्मलेन के रूप में याद करेंगी जिसमें अफ्रीकी संघ को G20 की पूर्ण सदस्यता दी गई। इसमें प्रधानमंत्री मोदी का यह दृष्टिकोण भी परिलक्षित हुआ है जिसमें वह ऐसे समूहों व मंचों पर ग्लोबल साउथ के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के लिए मुखर रहे हैं। अफ्रीका के साथ भारतीय संबंधों को प्रगाढ़ करने के पीएम मोदी के प्रयास 2015 में नई दिल्ली में आयोजित हुए भारत-अफ्रीका शिखर सम्मलेन के दौरान ही स्पष्ट हो गए थे, जहां उन्होंने सभी अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों की मेजबानी की थी। भारत की G20 अध्यक्षता के शुरुआती प्रयासों में ग्लोबल साउथ सम्मलेन आयोजित करना था। G20 में अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्य के रूप में सम्मिलित किए जाने की काफी प्रशंसा की गई है, विशेष तौर पर ऐसे वर्गों द्वारा जो वैश्विक विकास व संवाद के हाशिए पर खड़े देशों के हिमायती हैं।

आज हमें यह देखकर बहुत खुशी होती है कि भारत Global Biofuels Alliance में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जो वैश्विक sustainability की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर की शुरुआत समूचे विश्व के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह वैश्विक समृद्धि की नींव रखेगा। ये आमजन के जीवन में सुधारात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक ऐसे माहौल का निर्माण करेगा, जिसमें सभी देश अपनी पारस्परिक क्षमता के साथ योगदान देंगे। इस कॉरिडोर की परिकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए हम पीएम मोदी की सराहना करते हैं।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हुई सैकड़ों द्विपक्षीय बैठकों ने न केवल मौजूदा संबंधों को मजबूत किया, बल्कि सहयोग और व्यापार का एक आशाजनक मार्ग भी प्रशस्त किया है, जो आने वाले समय में निश्चित ही फलदायी साबित होगा।

भारत की G20 अध्यक्षता को 'पीपुल्स G20' के रूप में मनाया जाएगा। यह वास्तव में लोगों द्वारा संचालित प्रयास और भारत की स्थाई भावना का प्रमाण है। 60 से अधिक शहरों ने 200 बैठकों की मेजबानी की और 1.5 करोड़ नागरिकों की उपस्थिति ने यह सुनिश्चित किया कि हमारे लोगों की आवाज महत्वपूर्ण चर्चाओं में गूंजती रहे और इन महत्वपूर्ण चर्चाओं में जमीनी दृष्टिकोण और आकांक्षा का समावेश भी रहे।

संक्षेप में कहें तो G20 शिखर सम्मलेन की सफलता ने हर भारतवासी के दिल को गर्व की भावना से भर दिया। जनता के प्रतिनिधि के रूप में हमें यह पूर्ण विश्वास है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत निरंतर विकास, सहयोग और वैश्विक नेतृत्व के मार्ग पर अग्रसर रहेगा और एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करेगा जिसे आने वाली पीढ़ियां आशा और सकारात्मकता के साथ देखेंगी।

सम्पादकीय

स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें!

विश्व व्यवस्था में नया भारत नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अपनी साख बढ़ाती जा रही है। भारत चहुमुखी विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। ऐसे समय में भारत ने G–20 की अध्यक्षता करते दुनिया को अपनी चुनौतियों से लड़ते एक नई वैश्विक मानवीय संरचना को गढ़ने में लगा है। भारत द्वारा दिल्ली में प्रस्तावित विचार–प्रस्ताव इससे सम्बन्धित विश्व के देशों ने स्वीकार किये। जिससे भारत की संसार में प्रतिष्ठा स्थापित हुई।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए नरेन्द्र मोदी ने कहा कि G–20 के प्रेसिडेंट के तौर पर, भारत, आप सभी का हार्दिक स्वागत करता है। इस समय जिस स्थान पर हम एकत्रित हैं, यहाँ से कुछ ही किलोमीटर के फासले पर लगभग ढाई हजार साल पुराना एक स्तंभ लगा हुआ है।

इस स्तंभ पर प्राकृत भाषा में लिखा है–

"हेवम लोकसा हितमुखे ति, अथ इयम नातिसु हेवम"

अर्थात, मानवता का कल्याण और सुख सदैव सुनिश्चित किया जाए। ढाई हजार साल पहले, भारत की भूमि ने, यह संदेश पूरे विश्व को दिया था।

आइए, इस सन्देश को याद कर, इस G–20 समिट का हम आरम्भ करें। इक्कीसवीं सदी का यह समय, पूरी दुनिया को नई दिशा देने वाला एक महत्वपूर्ण समय है। ये वो समय है, जब बरसों पुरानी चुनौतियां, हमसे नए समाधान मांग रही हैं।

आज G–20 के प्रेसिडेंट के तौर पर भारत पूरी दुनिया का आह्वान करता है, कि हम मिलकर सबसे पहले इस Global Trust Deficit को एक विश्वास, एक भरोसे में बदलें। यह हम सभी के साथ मिलकर चलने का समय है। और इसलिए, "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" का मंत्र हम सभी के लिए एक पथ प्रदर्शक बन सकता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल–पुथल हो, नॉर्थ और साउथ का डिवाइड हो, ईस्ट और वेस्ट की दूरी हो, Food, Fuel और Fertiliser का मैनेजमेंट हो, Terrorism और साइबर सिक्योरिटी हो, हेल्थ, एनर्जी और वॉटर सिक्योरिटी हो, वर्तमान के साथ ही, आने वाली पीढ़ियों के लिए, हमें इन चुनौतियों के ठोस समाधान की तरफ बढ़ना ही होगा।

भारत की G–20 प्रेसीडेंसी, देश के भीतर और देश के बाहर, Inclusion का, "सबका साथ" का प्रतीक बन गई है। भारत में ये People's G–20 बन गया। करोड़ों भारतीय इससे जुड़े। देश के 60 से ज़्यादा शहरों में 200 से ज्यादा अधिक बैठकें हुई। सबका साथ की भावना से ही भारत ने प्रस्ताव रखा था कि अफ्रीकन यूनियन को G–20 की स्थाई सदयस्ता दी। आज भोगवादी संस्कृति को पिछाड़ते हुए मानवीय, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक विश्वव्यवस्था की पुर्नस्थापना के प्रयास के लिए भारतीय विचार, प्रयास, नेतृत्व को कोटिशः बधाई, अभिनन्दन।

bjpkamaljyoti@gmail.com

"लोकतान्त्रिक" विचारधारा पर अटूट विश्वास!

विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश, जिसमें सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः का भाव सबके सुमंगल की कामना करता है। दुनिया के सभी मत, पंथ, सम्प्रदाय यहाँ फले–फुले "सर्व पंथ समादर" यहाँ की संस्कृति रही है। जिसके कारण विश्वगुरू की पदवी रही। भारत, आस्था, अध्यात्म और परंपराओं की डायवर्सिटी की भूमि है। दुनिया के अनेक बड़े धर्मों ने यहां जन्म लिया है। दुनिया के हर धर्म ने यहां सम्मान पाया है।

"Mother of Democracy" के रूप में, संवाद और लोकतान्त्रिक विचारधारा पर अनंत काल से हमारा विश्वास अटूट है। हमारा वैश्विक व्यवहार, 'वसुधैव कुटुम्बकम', यानि world is one family के मूल भाव पर आधारित है। विश्व को एक परिवार मानने का यही भाव, हर भारतीय को One Earth के दायित्व–बोध से भी जोड़ता है।

One Earth की भावना से ही भारत ने Lifestyle for Environment Mission की शुरुआत की है। भारत के आग्रह पर, और आप सबके सहयोग से, पूरा विश्व इस साल International Year of Millets मना रहा है, और यह भी Climate Security की भावना से जुड़ा हुआ है। इसी भावना के साथ, COP–26 में भारत ने "Green Grids Initiative – One Sun, One World, One Grid" लॉन्च किया था। आज भारत दुनिया के उन देशों में है जहां बहुत बड़े पैमाने पर सोलर रिवॉल्यूशन चल रहा है।

भारत के करोड़ों किसान अब नैचुरल फार्मिंग अपना रहे हैं। यह मानव स्वास्थ्य के साथ–साथ Soil की, Earth की health को सुरक्षित रखने का भी बहुत बड़ा अभियान है। हमने भारत में ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए National Green Hydrogen Mission भी लॉन्च किया है। G–20 की प्रेसिडेंसी के दौरान, भारत ने Global Hydrogen Ecosystem बनाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

Climate की चुनौती को ध्यान में रखते हुए एनर्जी ट्रांजिशन, इक्कीसवीं सदी के विश्व की बहुत बड़ी आवश्यकता है। Inclusive एनर्जी ट्रांजिशन के लिये ट्रिलियन्स ऑफ़ डॉलर्स की जरूरत है। स्वाभाविक रूप से, इसमें विश्व के विकसित देशों की बहुत बड़ी भूमिका है।

भारत के साथ–साथ ग्लोबल साउथ के सभी देशों को खुशी है कि विकसित देशों ने इस साल, यानि कि 2023 में एक अहम् सकारात्मक पहल की है। विकसित देशों ने climate finance के लिए अपने 100 बिलियन डॉलर के कमिटमेंट को पूरा करने की पहली बार इच्छा जाहिर की है। "Green development Pact" को अपना कर, G–20 ने सस्टेनेबल और ग्रीन ग्रोथ के प्रति अपने दायित्वों का भी निर्वहन किया है।

सबका प्रयास की भावना के साथ, आज G–20 के इस मंच पर भारत के कुछ सुझाव भी हैं। आज समय की मांग है कि सभी देश निमस ब्लेंडिंग के क्षेत्र में साथ मिलकर काम करें। हमारा प्रस्ताव है कि पेट्रोल में इथेनॉल ब्लेंडिंग को ग्लोबल स्तर पर 20 परसेंट तक ले जाने के लिए इनिशिएटिव लिया जाए।

या फ़िर, Global good के लिए हम कोई और ब्लेंडिंग मिक्स निकालने पर काम करें, जिससे एनर्जी सप्लाई बनी रहे और climate भी सुरक्षित रहे। इस सन्दर्भ में, आज हम Global Biofuel Alliance लॉन्च कर रहे हैं। भारत आप सबको इससे जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है।

पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए दशकों से Carbon Credit की चर्चा चल रही है। Carbon Credit इस भावना पर बल देता है कि क्या नहीं करना चाहिए। यह एक नकारात्मक नजरिया है। इस कारण, अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता कि क्या सकारात्मक कदम उठाए जाने चाहिए। सकारात्मक क़दमों के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था का अभाव है। Green Credit हमें इसी का रास्ता दिखाता है। इस सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए, मेरा प्रस्ताव है कि G–20 के देश, एक "Green Credit Initiative" पर काम की शुरुआत करें।

आप सभी भारत के मून मिशन, चंद्रयान, की सफलता से

परिचित हैं। इससे उपलब्ध होने वाला डेटा, पूरी मानवता के काम आने वाला है। इसी भावना से, भारत "G20 Satellite Mission for Environment and Climate Observation" लॉन्च करने का प्रस्ताव भी रख रहा है।

इससे मिलने वाले climate और weather डेटा सभी देशों, विशेषकर ग्लोबल साउथ के देशों के साथ शेयर किये जाएँगे। भारत G–20 के सभी देशों को इस initiative से जुड़ने के लिए आमंत्रित करता है।

G20 समिट: नई दिल्ली घोषणा पत्र को मिली मंजूरी, जानिए 10 बड़े सूत्र, जो भारत की बड़ी सफलता को बताती हैं।

G–20 समिट से भारत की सफलता की सबसे बड़ी खबर सामने आई है। दरअसल नई दिल्ली G–20 घोषणापत्र को मंजूर कर लिया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि सदस्य देशों के बीच सहमति के साथ G–20 ने 'नई दिल्ली लीडर्स समिट डिक्लेरेशन' को अपनाया है। मोदी ने 'भारत मंडपम' में शिखर सम्मेलन के दूसरे सत्र को संबोधित करते हुए कहा, 'अभी–अभी अच्छी खबर मिली है कि हमारी टीम की कड़ी मेहनत और आपके सहयोग के कारण, नई दिल्ली जी20 लीडर्स समिट डिक्लेरेशन पर आम सहमति बन गई है।' जानिए नई घोषणा पत्र की 10 बड़ी बातें जो भारत की कामयाबी को बताता है।

37 पेजों के घोषणा पत्र में आतंकवाद के सभी रूपों की निंदा की गई है। समिट शुरू होने से पहले ही सबकी इस पर निगाह थी कि सभी सदस्य देश संयुक्त घोषणा पत्र पर राजी होंगे या नहीं।नई दिल्ली G–20 घोषणापत्र में रूस का सीधे तौर पर नाम नहीं लिया गया, इसमें यूक्रेन युद्ध लिखा है। इसमें कहा गया कि यूक्रेन में युद्ध के संबंध में, बाली में चर्चा को याद करते हुए, हमने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपनाए गए अपने राष्ट्रीय पदों और प्रस्तावों को दोहराया। इस बात पर जोर दिया कि सभी राज्यों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों के अनुरूप कार्य करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप, सभी राज्यों को किसी भी राज्य की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ क्षेत्रीय अधिग्रहण की धमकी या बल के उपयोग से बचना चाहिए। परमाणु हथियारों का उपयोग या उपयोग की धमकी अस्वीकार्य है।

विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि G–20 नेताओं ने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की निंदा की और माना कि यह अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक है।

G–20 शेरपा अमिताभ कांत ने कहा कि रूस–यूक्रेन मुद्दे पर विकाशील देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं ने सहमति बनाने में अहम भूमिका निभाई। भारत ने इंडोनेशिया, ब्राज़ील, दक्षिण अफ्रीका के साथ मिलकर काम किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और अधिकारियों की अथक मेहनत से ही यह संभव हुआ है।

वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि भारत की G–20 अध्यक्षता ने ऐसे समाधान तैयार किए हैं जो प्रत्येक सदस्य के साथ मेल खाते हैं और सभी के लिए साझा रास्ता पेश करते हैं। बड़े, बेहतर और अधिक प्रभावी बहुपक्षीय विकास बैंकों के लिए G–20 में समझौता हुआ है। G–20 मानता है कि महामारी के बाद की विश्व व्यवस्था इसके पहले की विश्व व्यवस्था से अलग होनी चाहिए।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि G–20 घोषणापत्र में परिवर्तन, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे पर ध्यान देने के साथ प्रौद्योगिकी की समावेशी भूमिका पर प्रकाश डाला गया है। G–20 ने भारत को विश्व के लिए तैयार करने और विश्व को भारत के लिए तैयार करने में योगदान दिया है। हमारे लिए यह संतुष्टि की बात है कि अफ्रीकन यूनियन को आज भारत की अध्यक्षता में G–20 को स्थायी सदस्यता दी गई।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि समिट में एक धरती, एक परिवार और एक भविष्य पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि देश के 60 शहरों में G–20 की बैठकें हुई। 37 पन्नों के घोषणापत्र में यूक्रेन का चार बार जिक्र किया गया है। जयशंकर ने कहा कि 2030 तक हम सतत विकास का लक्ष्य हासिल करेंगे।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि समिट में 21वीं सदी के चुनौतियों पर चर्चा की गई। इस दौरान वैश्विक समस्याओं के निराकरण पर जोर दिया गया।

बैठक के दौरान क्रिप्टो के नियमन पर भी चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि इस बात पर चर्चा की गई कि कोई भी देश पीछे ना छूटे। इस दौरान ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं पर चर्चा की गई।

हमने भू–राजनीतिक तनाव के चुनौतीपूर्ण समय में अध्यक्षता ग्रहण की। आज मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि भारतीय G–20 की अध्यक्षता ने बात को आगे बढ़ाया है। वैश्विक समाधानों की हमारी खोज में किसी को भी पीछे नहीं रहना चाहिए।

मानव–केंद्रित वैश्वीकरण

हमें जी20 को दुनिया के अंतिम छोर तक ले जाना है, किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना है।

नरेन्द्र मोदी

'वसुधैव कुटुम्बकम' – हमारी भारतीय संस्कृति के इन दो शब्दों में एक गहरा दार्शनिक विचार समाहित है। इसका अर्थ है, 'पूरी दुनिया एक परिवार है'। यह एक ऐसा सर्वव्यापी दृष्टिकोण है जो हमें एक सार्वभौमिक परिवार के रूप में प्रगति करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक ऐसा परिवार जिसमें सीमा, भाषा और विचारधारा का कोई बंधन ना हो।

जी–20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान, यह विचार मानव–केंद्रित प्रगति के आह्वान के रूप में प्रकट हुआ है। हम व्दम म्तजी के रूप में, मानव जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक साथ आ रहे हैं। हम व्दम थ्ंउपसल के रूप में विकास के लिए एक–दूसरे के सहयोगी बन रहे हैं। और व्दम थ्नजनतम के लिए हम एक साझा उज्जवल भविष्य की ओर एक साथ आगे बढ़ रहे हैं।

कोरोना वैश्विक महामारी के बाद की विश्व व्यवस्था इससे पहले की दुनिया से बहुत अलग है। कई अन्य बातों के अलावा, तीन महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

पहला, इस बात का एहसास बढ़ रहा है कि दुनिया के जीडीपी–केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर मानव–केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

दूसरा, दुनिया ग्लोबल सप्लाई चेन में सुदृढ़ता और विश्वसनीयता के महत्व को पहचान रही है।

तीसरा, वैश्विक संस्थानों में सुधार के माध्यम से बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने का सामूहिक आह्वान सामने है।

जी–20 की हमारी अध्यक्षता ने इन बदलावों में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है।

दिसंबर 2022 में जब हमने इंडोनेशिया से अध्यक्षता का भार संभाला था, तब मैंने यह लिखा था कि जी–20 को मानसिकता में आमूल–चूल परिवर्तन का वाहक बनना चाहिए।

विकासशील देशों, ग्लोबल साउथ के देशों और अफ्रीकी देशों की हाशिए पर पड़ी आकांक्षाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए इसकी विशेष आवश्यकता है।

इसी सोच के साथ भारत ने 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' का भी आयोजन किया था। इस समिट में 125 देश भागीदार बने। यह भारत की अध्यक्षता के तहत की गई सबसे महत्वपूर्ण पहलों में से एक रही। यह ग्लोबल साउथ के देशों से उनके विचार, उनके अनुभव जानने का एक महत्वपूर्ण प्रयास था। इसके अलावा, हमारी अध्यक्षता के तहत न केवल अफ्रीकी देशों की अबतक की सबसे बड़ी भागीदारी देखी गई है, बल्कि जी–20 के एक स्थायी सदस्य के रूप में अफ्रीकन यूनियन को शामिल करने पर भी जोर दिया गया है।

हमारी दुनिया परस्पर जुड़ी हुई है, इसका मतलब यह है कि विभिन्न क्षेत्रों में हमारी चुनौतियां भी आपस में जुड़ी हुई हैं। यह 2030 एजेंडा के मध्य काल का वर्ष है और कई लोग चिंता जता रहे हैं कि सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के मुद्दे पर प्रगति पटरी से उतर गई है।

एसडीजी के मोर्चे पर तेजी लाने से संबंधित जी–20 2023 का एक्शन प्लान भविष्य की दिशा निर्धारित करेगा। इससे एसडीजी को हासिल करने का रास्ता तैयार होगा।

ग्लोबल साउथ के कई देश विकास के विभिन्न चरणों में हैं और इस दौरान क्लाइमेट एक्शन का ध्यान रखा जाना चाहिए। क्लाइमेट एक्शन की आकांक्षा के साथ हमें ये भी देखना होगा कि क्लाइमेट फाइनेंस और ट्रांसफर ऑफ टेक्नॉलजी का भी ख्याल रखा जाए।

हमारा मानना है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए पाबंदियों वाले रवैये को बदलना चाहिए। 'क्या नहीं किया जाना चाहिए' से हटकर 'क्या किया जा सकता है' वाली सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें एक रचनात्मक कार्यसंस्कृति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

एक टिकाऊ और सुदृढ़ ब्लू इकॉनमी के लिए चेन्नई एचएलपी हमारे महासागरों को स्वस्थ रखने में जुटी है।

ग्रीन हाइड्रोजन इनोवेशन सेंटर के साथ, हमारी अध्यक्षता में स्वच्छ एवं ग्रीन हाइड्रोजन से संबंधित एक ग्लोबल इकोसिस्टम तैयार होगा।

वर्ष 2015 में, हमने इंटरनेशनल सोलर अलायंस का शुभारंभ किया था। अब, ग्लोबल बायोफ्यूल्स अलायंस के माध्यम से हम दुनिया को एनर्जी ट्रांजिशन के योग्य बनाने में सहयोग करेंगे। इससे सर्कुलर इकॉनमी का फायदा ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचेगा।

क्लाइमेट एक्शन को लोकतांत्रिक स्वरूप देना, इस आंदोलन को गति प्रदान करने का सबसे अच्छा तरीका है। जिस प्रकार लोग अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर रोजमर्रा के निर्णय लेते हैं, उसी प्रकार वे इस धरती की सेहत पर होने वाले असर को ध्यान में रखकर अपनी जीवनशैली तय कर सकते हैं। जैसे योग वैश्विक जन आंदोलन बन गया है, उसी तरह हम 'लाइफस्टाइल फॉर सस्टेनेबल इनवायरमेंट' (स्पथ्म्) को भी प्रोत्साहित कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण, खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती होगी। इससे निपटने में

मोटा अनाज या श्रीअन्न से बड़ी मदद मिल सकती है। श्रीअन्न क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर को भी बढ़ावा दे रहा है। इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स के दौरान हमने श्रीअन्न को वैश्विक स्तर पर पहुंचाया है। द डेक्कन हाई लेवल प्रिंसिपल्स ऑन फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन से भी इस दिशा में सहायता मिल सकती है।

टेक्नॉलजी परिवर्तनकारी है लेकिन इसे समावेशी भी बनाने की जरूरत है। अतीत में, तकनीकी प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों को समान रूप से नहीं मिला। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने दिखाया है कि कैसे टेक्नॉलजी का लाभ उठाकर असमानताओं को कम किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, दुनिया भर में अरबों लोग जिनके पास बैंकिंग सुविधा नहीं है, या जिनके पास डिजिटल पहचान नहीं है, उन्हें डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) के माध्यम से साथ लिया जा सकता है।

भागीदारी के अंतर को कम करने और निर्णय लेने में महिलाओं की एक बड़ी भूमिका को सक्षम बनाने पर काम कर रही है।

भारत के लिए, जी–20 की अध्यक्षता केवल एक उच्च स्तरीय कूटनीतिक प्रयास नहीं है। मदर ऑफ डेमोक्रेसी और मॉडल ऑफ डाइवर्सिटी के रूप में हमने इस अनुभव के दरवाजे दुनिया के लिए खोल दिये हैं।

आज किसी काम को बड़े स्तर पर करने की बात आती है तो सहज ही भारत का नाम आ जाता है। जी–20 की अध्यक्षता भी इसका अपवाद नहीं है। यह भारत में एक जन आंदोलन बन गया है।

जी–20 प्रेसीडेंसी का हमारा कार्यकाल खत्म होने तक भारत के 60 शहरों में 200 से अधिक बैठकें आयोजित की जा चुकी होंगी। इस दौरान हम 125 देशों के लगभग 100,000 प्रतिनिधियों की मेजबानी कर चुके होंगे। किसी भी प्रेसीडेंसी ने कभी भी इतने विशाल और विविध भौगोलिक विस्तार को इस

डीपीआई का उपयोग करके हमने जो परिणाम प्राप्त किए हैं, उन्हें पूरी दुनिया देख रही है, उसके महत्व को स्वीकार कर रही है। अब, जी–20 के माध्यम से हम विकासशील देशों को डीपीआई अपनाने, तैयार करने और उसका विस्तार करने में मदद करेंगे, ताकि वो समावेशी विकास की ताकत हासिल कर सकें।

भारत का सबसे तेज गति से बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाना कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हमारे सरल, व्यावहारिक और सस्टेनेबल तरीकों ने कमजोर और वंचित लोगों को हमारी विकास यात्रा का नेतृत्व करने के लिए सशक्त बनाया है। अंतरिक्ष से लेकर खेल, अर्थव्यवस्था से लेकर उद्यमिता तक, भारतीय महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। आज महिलाओं के विकास से आगे बढ़कर महिलाओं के नेतृत्व में विकास के मंत्र पर भारत आगे बढ़ रहा है। हमारी जी–20 प्रेसीडेंसी जेंडर डिजिटल डिवाइड को पाटने, लेबर फोर्स में

तरह से शामिल नहीं किया है।

भारत की डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी, डाइवर्सिटी और डेवलपमेंट के बारे में किसी और से सुनना एक बात है और उसे प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करना बिल्कुल अलग है। मुझे विश्वास है कि हमारे जी–20 प्रतिनिधि इसे स्वयं महसूस करेंगे।

हमारी जी–20 अध्यक्षता विभाजन को पाटने, बाधाओं को दूर करने और सहयोग को गहरा करने का प्रयास करती है। हमारी भावना एक ऐसी दुनिया के निर्माण की है, जहां एकता हर मतभेद से ऊपर हो, जहां साझा लक्ष्य अलगाव की सोच को खत्म कर दे।

जी–20 अध्यक्ष के रूप में, हमने वैश्विक पटल को बड़ा बनाने का संकल्प लिया था, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया कि हर आवाज सुनी जाए और हर देश अपना योगदान दे। मुझे विश्वास है कि हमने कार्यों और स्पष्ट परिणामों के साथ अपने संकल्प पूरे किये है।

सनातन विचार का वैश्विक उद्घोष

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

नरेंद्र मोदी भारत ही नहीं दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। जी 20 सम्मेलन के दौरान भी यह सर्वेक्षण प्रमाणित हुआ। नरेंद्र मोदी कर नेतृत्व में भारत वैचारिक रूप से महाशक्ति बन चुका है। नरेंद्र मोदी ने

सर्वे भवन्तु सुखिनः
वसुधैव कुटुम्बकम
स्वस्ति अस्तु विश्वस्य!

के भारतीय चिंतन से दुनिया को अवगत कराया। वन अर्थ' 'वन फेमिली' और वन फ्यूचर भी भारतीय संदेश है।

सम्मेलन में वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85 प्रतिशत वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व की लगभग दो तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले नेता थे। नरेंद्र मोदी के प्रस्ताव पर अफ्रीकी यूनियन भी जी 20 में शामिल हुई। इस प्रकारों यहां दिया गया भारतीय संदेश पूरी दुनिया में सुना गया। लोग अचंभित थे। ऐसा उदार चिंतन दुनिया की किसी सभ्यता संस्कृति में नहीं रहा। दुनिया ने तो सभ्यताओं का संघर्ष ही देखा है। नरेंद्र मोदी का कूटनीतिक कौशल भी सम्मेलन में दिखाई दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने G–20 की अध्यक्षता ब्राजील के राष्ट्रपति लूला डा सिल्वा को सौंप दी। G–20 शिखर सम्मेलन में भारतीय सभ्यता संस्कृति, अतिथि सत्कार की जयजयकार हुई। भारतीय सूक्तियां, मंत्रों से वैश्विक समस्याओं के समाधान पर सहमति बन रही है। भारत मण्डपम में हमरी संस्कृति परिलक्षित हो रही है। विदेशी मेहमान उसमें दिलचस्पी दिखा रहे हैं। दूसरी तरफ ऐसे तत्व भी सक्रिय हैं, जो पहले भी राष्ट्रीय गौरव से विमुख रहे हैं। चीन की फंडिंग पर एजेंडे तय करने की बात भी चर्चा में आ चुकी है। जी 20 में नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति की वार्ता के बाद पत्रकार वार्ता ना होने को भी मुद्दा बनाने का प्रयास किया गया। नरेंद्र मोदी ने पंद्रह देशों के नेताओं से दो दिन में वार्ता की। वहां पहुँचे अन्य संगठन के नेताओं से संवाद किया। समय दो दिन का. उसमें भी शिखर सम्मेलन के कई सत्र। अन्य अनेक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम। क्या प्रत्येक शिखर वार्ता के बाद पत्रकार वार्ता सम्भव थी। फिर अमेरिकी राष्ट्रपति के संदर्भ में विवाद उठाने की क्या आवश्यकता थी। प्रश्न भी वही हो सकते थे, जो राहुल गांधी अमेरिका में बोल रहे थे। भारत लोकतंत्र खत्म हो गया। संविधान खत्म हो गया, मुसलमानों को निशाना बनाया जा रहा है। या वाई डेन से चीन के बारे में सवाल होते। इस तरह जी 20 के मूल उद्देश्य से ध्यान बंटाने का प्रयास होता। नकारात्मक सुर्खियां बनाई जाती। अच्छा

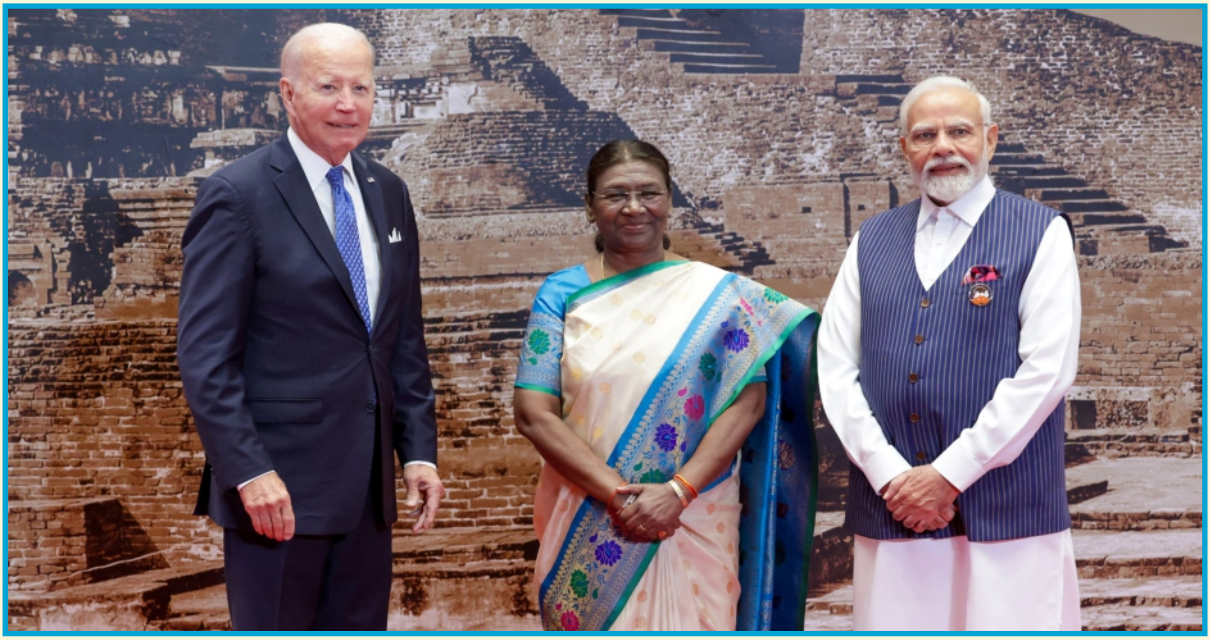

हुआ यह नकारात्मक एजेंडा सफल नहीं हुआ।

नई दिल्ली लीडर्स घोषणापत्र को अब तक का सबसे विस्तृत और व्यापक घोषणापत्र था। घोषणापत्र में कुल एक सौ बारह मुद्दे शामिल थे। मोदी की प्रयासों से सभी पर सर्वसम्मति बन गई। रूस–यूक्रेन के मुद्दे पर मतभेद थे। मोदी ने इसका भी समाधान कर दिया। उन्होंने घोषणापत्र के पैराग्राफ में संशोधन कर दिया। इसमें सम्बन्धित पूरा विषय भी आ गया। कहा गया कि किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता पर हमला नहीं किया जाए। ताकत के दम पर किसी देश की सीमा पर अतिक्रमण नहीं किया जाए। इसके बाद मतभेदों का निवारण हो गया। सर्वसम्मति बन गई। सतत और ग्रीन विकास पर फोकस रहा। स्वच्छ ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन बनाने पर सहमति बनी है। भारत वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन शुरू कर रहा हैं। दुनिया भर को इस पहल में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया। ईको कॉरिडोर प्रोजेक्ट का ऐलान हुआ। अमेरिका, भारत, सऊदी अरब और यूएई के साथ कई देश मिलकर आपसी कनेक्टिविटी को बेहतर करना चाहते हैं। इसके लिए भारत मिडिल ईस्ट यूरोप ईको कॉरिडोर प्रोजेक्ट का ऐलान किया गया है। इस प्रोजेक्ट के तहत भारत और मिडिल ईस्ट के देशों से होते हुए यूरोप–अमेरिका को भी कनेक्ट किया जाएगा। मिडल ईस्ट देशों के बीच रेल लाइन बनाई जाएगी और फिर पोर्ट के जरिए इसे भारत से जोड़ा जाएगा। इस बड़े ऐलान से चीन के प्रोजेक्ट बीआरआई को झटका लगा है। भारत पहले से ही बीआरआई का विरोध करता रहा है। आतंकवाद और मनी लॉन्ड्रिंग की रोकथाम के लिए कदम उठाने पर भी सहमति बनी है। बहुपक्षवाद को फिर से जीवित करने को लेकर सहमति और मजबूत, टिकाऊ और समावेशी विकास, ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं पर जोर देने पर सहमत हुए।

नई दिल्ली घोषणा पत्र में चीन से लेकर पाकिस्तान तक को घेरने का प्रयास किया गया है। एशिया में चीन अपनी विस्तारवादी नीति को आगे बढ़ा रहा है। चीन अनावश्यक रूप से विवादित नक्शा जारी करता रहता है। वह ताइवान को अपना हिस्सा बताता है। पाकिस्तान आतंकवाद का केंद्र है। चीन और पाकिस्तान दोनों को संदेश दिया गया।

मजबूत, टिकाऊ, संतुलित और समावेशी विकास, सतत भविष्य के लिए हरित विकास समझौता, बहुपक्षीय संस्थान, तकनीकी परिवर्तन और डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा, इंटरनेशनल टैक्सेशन, लैंगिक समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना, वित्तीय क्षेत्र के मुद्दे, आतंकवाद और मनी लॉन्ड्रिंग का मुकाबला, अधिक समावेशी विश्व का निर्माण आदि पर बहुसहमति बनी। उन देशों पर ध्यान देने की बात की गई है जो विकासशील हैं। पर्यावरण के लिए बायोफ्यूल अलायंस पर निर्णय हुआ। नई दिल्ली लीडर्स घोषणापत्र को अब तक का सबसे विस्तृत और व्यापक घोषणापत्र है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि G–20 एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य के सपने को लेकर आशावादी प्रयासों का प्लेटफार्म बन गया है। सम्मेलन में आर्थिक वृद्धि को सकल घरेलू उत्पाद केन्द्र रखने के बजाय मानव केन्द्रीत बनाने की जरूरत पर बल दिया गया। मानव केन्द्रीत विकास की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। भारत ने सम्मेलन में चन्द्रयान तीन के लैंडर और रोवर से मिले आंकडों और यूपी आई जैसे डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे की सुविधाओं को दूसरे देशों के साथ साझा करने की पेशकश की है। बहुपक्षीय विकास वित्त संस्थानों की पूंजी बढाने, सामाजिक आर्थिक विकास के लिए नयी पहल तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास कार्य में सहयोग तथा कृत्रिम बुद्धिमता के इस्तेमाल को बढावा देने का भी संकल्प है।

भारत दुनिया का प्राचीनतम् राष्ट्र

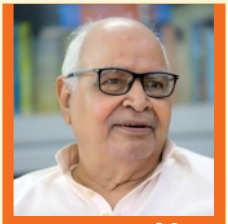
हृदयनारायण दीक्षित

देश के नाम को लेकर अच्छी खासी बहस चल पड़ी है। भारत अति प्राचीन नाम है। इस नामकरण के पीछे अनेक कथाएं भी चलती हैं। संविधान सभा में 18 सितंबर 1949 के दिन बहस हुई थी। हरिविष्णु कामथ ने भारत, हिन्दुस्तान, हिन्द भरत भूमि व भारतवर्ष आदि नाम का सुझाव देते हुए दुष्यंत पुत्र भरत की कथा से भारत का उल्लेख किया। मद्रास के के० एस० सुब्बाराव ने भारत को प्राचीन नाम बताया और कहा कि, ''भारत नाम ऋग्वेद में भी है।'' कमलापति त्रिपाठी ने भी भारत के पक्ष में वैदिक और पौराणिक तर्क दिए। स्वाधीनता संग्राम के समय 'भारत माता की जय' पूरे देश का बीज मंत्र बना था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में चीनी यात्री ईतिसिंग द्वारा देश को भारत कहे जाने का उल्लेख किया है। भारत दुनिया का प्राचीनतम राष्ट्र है। राजनैतिक दृष्टि से भारत एक राष्ट्र राज्य है। लेकिन सांस्कृतिक अनुभूति में यह भारत माता है। भारत एक सांस्कृतिक प्रवाह है। एक सतत प्रवाहमान कविता। विश्व कल्याण में तपरत एक संपूर्ण जीवन दृष्टि। भारत एक विशेष प्रकार की एकात्म प्रकृति है। हजारों वर्ष पुराने इतिहास में भारत ने कभी भी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया। भारत का अर्थ ही प्रकाश सलंग्नता है। भा का अर्थ प्रकाश और रत का अर्थ सलंग्नता। भारत परम व्योम से धरती में प्रवाहित एक गुनगुनाने योग्य कविता – ऋचा है।

स्वाधीनता संग्राम के समय 'भारत माता की जय' पूरे देश का बीज मंत्र बना था।

ऋग्वेद के प्रतिष्ठित ऋषि विश्वामित्र गायत्री मंत्र के नाम से चर्चित ''तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात'' के दृष्टा रचयिता हैं। ऋग्वेद में उनके बारे में कहा गया है, ''विश्वामित्र के देखे रचे मंत्र सूक्त भारत के जनों की रक्षा करते हैं – विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मदं भारतं जनं।'' ऋग्वेद वाले विश्वामित्र मंत्र दृष्टा हैं। राम कथा वाले विश्वामित्र राक्षसों का वध कराने वाले हैं। शकुंतला विश्वामित्र की पुत्री थीं। शकुंतला और दुष्यंत के प्रेम से इतिहास प्रसिद्ध भरत का जन्म हुआ। महाभारत (शान्ति पर्व 2. 96) के अनुसार इन्हीं भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। संजय ने धृतराष्ट्र को बताया, ''अत्र ते वर्णयिष्यामि वर्षं भारत भारतम् – आपको भारतवर्ष का वर्णन सुनाता हूँ। आगे बताया गया कि यह देश इन्द्र, वैवस्वतमनु, ययाति, अम्ब्रीश, मुचकुन्द, शिवि आदि सबको प्रिय रहा है। (भीष्म पर्व नवां अध्याय) ऋग्वेद के रचनाकाल में आर्य जनों और गणों में विभाजित थे। ऋग्वेद में भरत जन हैं। भरतों की विशिष्ट इतिहास परम्परा है। यज्ञ की अग्नि से उनका संपर्क था। भारत कहने से अग्नि का ध्यान होता था। भारत अग्नि का विशेषण बन गया था – त्वं नो असि भारता अग्ने। (2. 7.5) भरत और भारत ऋग्वेद में हैं। वैदिक मंत्रों की रचना और गायन के कारण ऋषियों की वाणी को भारती कहा गया। मंत्रों का गायन सरस्वती के तट पर होता था। अग्नि की स्थापना इन्हीं ऋषियों ने की थी। एक मंत्र (3.28) के रचनाकार देवश्रवा और देववात भारत हैं। कहते हैं कि, ''भरत के पुत्र देवश्रवा और देववात भारत ने अग्नि को मंथन द्वारा उत्पन्न किया है। इस मंत्र में ऋषि नाम के साथ भारत जुड़ा हुआ है। वैदिक इंडेक्स में मैकडनल और कीथ ने ऋग्वेद के उद्धरण देकर भरतों का उल्लेख किया है। संभवतः दुष्यंत पुत्र भरत के कारण ही देश का नाम भारत हुआ। भरतजनों का सजग इतिहासबोध भी भारत नाम पड़ने का कारक हो सकता है। ऋषभ देव की परम्परा में भी भरत हैं। कुछ विद्वान उन्हें भी भारत के नामकरण से जोड़ते हैं। जो भी हो भारत अतिप्राचीन संज्ञा है, इस देश का नाम है।

पुराणों में भी भारत नाम की प्रतिष्ठा है। विष्णु पुराण के ऋषि कहते हैं कि, ''समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश है उसे भारत कहते हैं तथा उसकी संतानों (नागरिकों) को भारती कहते हैं – **उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।''** गीता में अनेक प्रसंगों में श्रीकृष्ण अर्जुन को भारत कहते हैं।

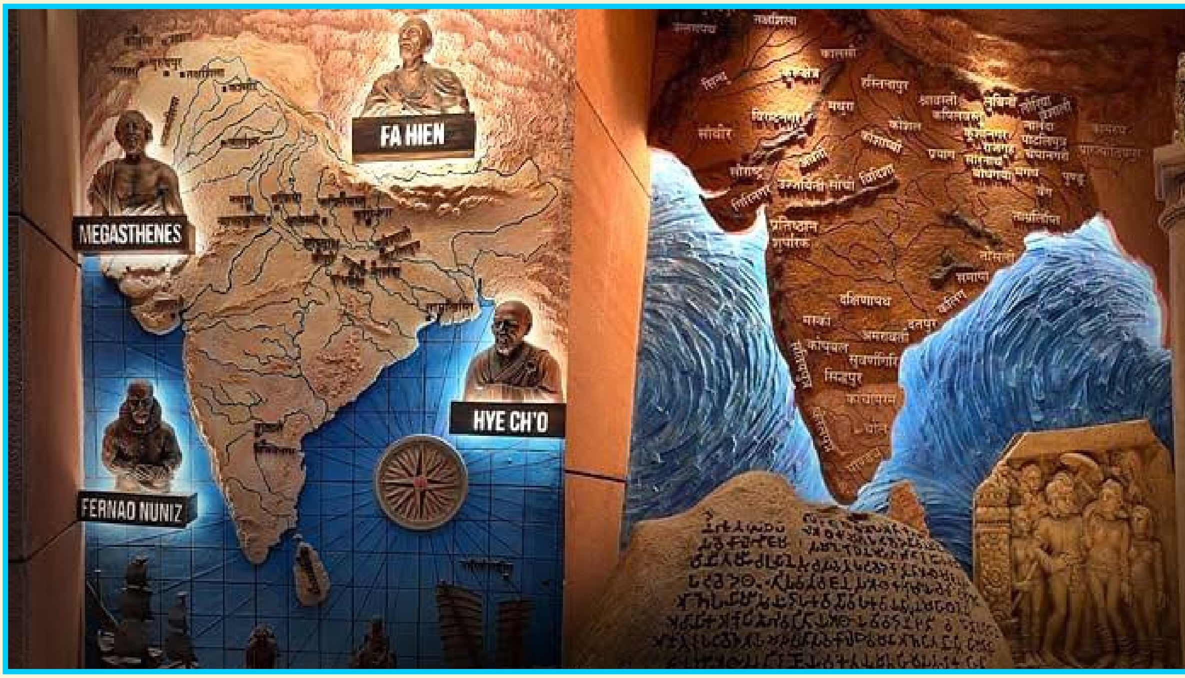

भारतवासी होना सौभाग्य का विषय है। दुनिया की सभी प्राचीन सभ्यताओं में देवता हैं। उन्हें दिव्य जाना गया है। उनकी उपासना होती है। वे भारत भूमि में जन्म लेने की इच्छा व्यक्त करते हैं। एक सुन्दर श्लोक में कहा गया है, ''देवतागण भारत देश के उत्कर्ष का गान करते हुए यहाँ पर स्वयं जन्म लेने की इच्छा प्रकट करते हैं – गायन्ति देवाः किल गीतिकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे। स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूत भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात।'' भारत निवासी घर परिवार के सभी अनुष्ठानों में संकल्प मंत्र का पाठ करते हैं। संकल्प मंत्र में 'जम्बूद्वीपे भारतखण्डे' शब्द का प्रयोग हुआ है। राष्ट्रगीत वन्दे मातरम भारत भक्ति का ही गीत है। इसी तरह राष्ट्रगान भी। कुछ विद्वान नाम को महत्वपूर्ण नहीं मानते। अपनी बात के समर्थन में शेक्सपियर का उल्लेख करते हैं कि ''नाम में क्या रखा है?'' नाटक की नायिका जूलिएट ने प्रेमी रोमियो से कहा था कि, ''तुम अपना कुल नाम लिखते हो। यह निरर्थक है। तुम रोमियो हो। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। गुलाब को गुलाब कहा जाए या किसी और नाम से पुकारा जाए। नाम से कोई फर्क नहीं पड़ता।'' लेकिन यह बात सही नहीं है। तुलसीदास ने नाम की महिमा बताई है। रामचरितमानस बालकाण्ड में तुलसीदास ने श्रीराम सहित सभी देवताओं को नमस्कार किया है। आखिर में कहा है कि मैं श्रीराम के नाम को नमस्कार करता हूँ। यह नाम महामंत्र है। कहते हैं, ''कोई विशेष रूप भी बिना नाम के नहीं पहचाना जा सकता। रूप के बिना नाम का स्मरण करने से विशेष प्रेम के साथ वह हृदय में बैठ जाता है।'' एक सुन्दर चैपाई में कहते हैं, ''नाम रूप गति अकथ कहानी/समझत सुखद न परहि बखानी।''

भारत नाम वैसा ही है। भारत का एक भूगोल है, रूप है। इस रूप में पवित्र नदियों का प्रवाह है। आकाश छूने को व्याकुल पहाड़ हैं। दिव्य और भव्य मंदिर हैं। हजारों वर्षों में फैला इतिहास है। अद्वैत दर्शन का जन्म यहीं हुआ। पूर्व मीमांसा, न्याय व वैशेषिकदर्शन का विकास यहीं हुआ और लोकायत का भी। यहाँ विश्ववरेण्य संस्कृति है। अनेक भाषाएँ हैं। अनेक बोलियाँ हैं। दुनिया की सबसे अनुशासित और रसपूर्ण भाषा संस्कृत का विकास यहीं हुआ। यहाँ के लोगों का मन भारत की आत्मीयता में रमता है। भारत तमाम संभावनाओं से भरा पूरा एक बीज है। सभी बीजों में पौध होने, पौध में पत्तियाँ उगने, पत्तियों में फूल खिलने और फूलों से बीज बनने की अनंत संभावनाएं होती हैं। भारतीय इतिहास में श्रेय और प्रेय की प्राप्ति के अनुकरणीय उदाहरण हैं। ऐसे राष्ट्र देवता और उसके नाम को स्मरण रखना हम सबका कर्तव्य है।

विश्व मे मानवता की मूल सनातन संस्कृति

शिव प्रताप शुक्ल

सनातन, अर्थात जो सदा से ही विद्यमान है। सनातन, अर्थात जो समय के साथ अविरल प्रवाहमान है। सनातन जिसे वैदिक हिन्दू संस्कृति के रूप में विश्व प्रमाणित करता है। सनातन , अर्थात जो पृथ्वी की सभी सभ्यताओं के मूल निहित है। सनातन जो हिन्दू संस्कृति का जीवन संविधान है। सनातन जिसमे पृथ्वी के समस्त प्राणियों, वनस्पतियों , चर, अचर , समस्त के कल्याण की शक्ति है। जो भारत वर्ष की आत्मा है। जिसमे विश्व का कल्याण निहित है। इस सनातन की प्राचीन उपस्थिति के प्रमाण से आज विश्व का प्रत्येक भूभाग भरा पड़ा है। सनातन में सांस्कृतिक उपासना और जीवन शैली के प्रमाण आधुनिक विश्व के प्रत्येक भूभाग में मिल रहे हैं और विश्व उन्हें स्वीकार कर रहा है। जब मैं आधुनिक विश्व की बात लिख रहा हूँ तो यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि प्राचीन और वर्तमान भूगोल में परिवर्तन के कारण यह शब्दावली प्रयोग करना आवश्यक है। यह इसलिए बहुत आवश्यक है क्योंकि कुछ आधुनिक शिक्षा से उपजे लोग भारत को 70 वर्ष पुराना राष्ट्र प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं। उन्हें यह बिल्कुल नही पता कि भारत है क्या, कितना पुराना या नया है। भारत का भूगोल कब से कैसे बनता है। विष्णु पुराण में स्पष्ट लिखा है–

उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं।
वर्षं तद भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।

इसका अर्थ यह है कि समुद्र के उत्तर से ले कर हिमालय के दक्षिण में जो देश है वही भारत है और यहाँ के लोग भारतीय हैं। अब यहां यह जान लेना भी बहुत आवश्यक है कि समुद्र की अवस्थिति वास्तव में है कहाँ। सबसे पहले बात करते हैं पृथ्वी के भूगोल यानि ज्योग्राफी की। आज हमे वर्तमान की ज्योग्राफी में यह पढ़ाया जाता है कि पैंजिया पृथ्वी का पहला महाद्वीप या यूं कहे सुपर महाद्वीप था। अन्य सभी नवीन महाद्वीप (एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, यूरोप, अंटार्कटिका एवं ऑस्ट्रेलिया) का जन्मदाता भी यही महाद्वीप है। टेकटोनिक प्लेट्स में गति बदलाव या विखंडन के कारण पैंजिया महाद्वीप में खंडन हुआ और यह टूटकर इन सात महाद्वीपों में बंट गया। गोंडवाना पैंजिया के दक्षिणी भाग को कहते हैं। गोंडवाना भूमि में प्रायद्वीप भारत, दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका और अंटार्कटिका समाहित है। अंगारा पैंजिया के उत्तरी भाग को कहते हैं। अंगारा भूमि में एशिया (प्रायद्वीपीय भारत को छोड़कर), उत्तरी अमेरिका एवं यूरोप समाहित है।

इससे पूर्व कि सनातन संस्कृति के वैश्विक परिदृश्य को रेखांकित किया जाय, यह जान लेना बहुत आवश्यक है कि वास्तव में भारत के अस्तित्व के प्रमाण किस रूप में लाखों वर्षो से हमारे शास्त्रीय परंपराओं में व्यवस्थित हैं।प्रामाणिक ग्रंथ मत्स्यमहापुराण में सभी सात प्रधान महाद्वीपों के बारे में बताया गया है। सात द्वीपों में जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप,शाल्मलद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंच द्वीप, शाकद्वीप तथा पुष्करद्वीप का वर्णन है। जम्बूद्वीप का विस्तार से भौगोलिक वर्णन है। अर्थात आज जिसे एशिया के रूप में हम पाते है वही जम्बूद्वीप के नाम से जाना जाता था। इस द्वीप का माप और भूगोल भी उपलब्ध है। शास्त्र कहता है–

'जम्बूद्वीपः समस्तानामेतेषां मध्य संस्थितः,
भारतं प्रथमं वर्षं ततः किंपुरुषं स्मृतम्,
हरिवर्षं तथैवान्यन्मेरोर्दक्षिणतो द्विज।
रम्यकं चोत्तरं वर्षं तस्यैवानुहिरण्यम्,
उत्तराः कुरवश्चैव यथा वै भारतं तथा।
नव साहस्त्रमेकैकमेतेषां द्विजसत्तम्,
इलावृतं च तन्मध्ये सौवर्णो मेरुरुच्छितः।
भद्राश्चं पूर्वतो मेरोः केतुमालं च पश्चिमे।

जम्बूद्वीप को बाहर से लाख योजन वाले खारे पानी के वलयाकार समुद्र ने चारों ओर से घेरा हुआ है। जम्बू द्वीप का विस्तार एक लाख योजन है। जम्बू (जामुन) नामक वृक्ष की इस द्वीप पर अधिकता के कारण इस द्वीप का नाम जम्बू द्वीप रखा गया था।

इस तथ्य को विष्णु पुराण इस रूप में कहता है–

एकादश शतायामाः
पादपागिरिकेतवः
जंबूद्वीपस्य सांजबूर्नाम
हेतुर्महामुने।

भारतवर्ष का अर्थ है राजा भरत का क्षेत्र और इन्ही राजा भरत के पुत्र का नाम सुमति था । इस विषय में वायु पुराण कहता है–

सप्तद्वीपपरिक्रान्तं जम्बूदीपं निबोधत।
अग्नीध्रं ज्येष्ठदायादं कन्यापुत्रं महाबलम।।
प्रियव्रतोअभ्यषिञ्चतं जम्बूद्वीपेश्वरंनृपम्।।
तस्य पुत्रा बभूवुर्हि प्रजापतिसमौजसः।
ज्येष्ठो नाभिरिति ख्यातस्तस्य किम्पुरूषोअनुजः।।
नाभेर्हि सर्गं वक्ष्यामि हिमाह्व तन्निबोधत।

ऋग्वेद में इस स्थान को 'सप्तसिंधु' प्रदेश कहा गया है। ऋग्वेद के नदी सूक्त (10.75) में इस क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों का वर्णन मिलता है, जो इस प्रकार हैं– कुभा (काबुल नदी), क्रुगु (कुर्रम), गोमती (गोमल), सिंधु, परुष्णी (रावी), शुतुद्री (सतलज), वितस्ता (झेलम), सरस्वती, यमुना तथा गंगा।

महाभारत में पृथ्वी का वर्णन आता है। सुदर्शन नामक यह द्वीप चक्र की भांति गोलाकार स्थित है, जैसे पुरुष दर्पण में अपना मुख देखता है, उसी प्रकार यह द्वीप चन्द्रमण्डल में दिखाई देता है। इसके दो अंशों में पिप्पल और दो अंशों में महान शश

(खरगोश) दिखाई देता है। अर्थात, दो अंशों में पिप्पल का अर्थ पीपल के दो पत्तों और दो अंशों में शश अर्थात खरगोश की आकृति के समान दिखाई देता है। आप कागज पर पीपल के दो पत्तों और दो खरगोश की आकृति बनाइए और फिर उसे उल्टा करके देखिए, आपको धरती का मानचित्र दिखाई देगा। महाभारत के भीष्म पर्व में महर्षि वेदव्यास जी लिखते हैं–

'सुदर्शनं प्रवक्ष्यामि द्वीपं तु कुरुनन्दन।
परिमण्डलो महाराज द्वीपोऽसौ चक्रसंस्थितः॥
यथा हि पुरुषः पश्येदादर्शे मुखमात्मनः।
एवं सुदर्शनद्वीपो दृश्यते चन्द्रमण्डले॥
द्विरंशे पिप्पलस्तत्र द्विरंशे च शशो महान्।।

इसी प्रकार ब्रह्म पुराण, अध्याय 18 में जम्बूद्वीप के महान होने का प्रतिपादन है। इसमे वर्णित है कि भारत भूमि में लोग तपश्चर्या करते हैं, यज्ञ करने वाले हवन करते हैं तथा परलोक के लिए आदरपूर्वक दान भी देते हैं। जम्बूद्वीप में सत्पुरुषों के द्वारा यज्ञ भगवान् का यजन हुआ करता है। यज्ञों के कारण यज्ञ पुरुष भगवान् जम्बूद्वीप में ही निवास करते हैं। इस जम्बूद्वीप में भारतवर्ष श्रेष्ठ है। यज्ञों की प्रधानता के कारण इसे (भारत को) को कर्मभूमि तथा और अन्य द्वीपों को भोग– भूमि कहते हैं।

तपस्तप्यन्ति यताये जुह्वते चात्र याज्विन।
दानाभि चात्र दीयन्ते परलोकार्थ मादरत॥
पुरुषैयज्ञ पुरुषो जम्बूद्वीपे सदेज्यते।
यज्ञोर्यज्ञमयोविष्णु रम्य द्वीपेसु चान्यथा॥
अत्रापि भारतश्रेष्ठ जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो कर्म भूरेषा यधाऽन्या भोग भूमयः॥

इसी तरह अगर शक्तिपीठों का भौगोलिक स्थिति देखे तो वे बलूचिस्तान से लेकर त्रिपुरा, कश्मीर से कन्याकुमारी बांग्लादेश और जाफना तक फैले हुए हैं। यह एक बनावटी स्थिति नहीं है। शक्तिपीठों की वैश्विक उपस्थिति प्रमाणित है। अभी हाल ही में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री ने बांग्लादेश में एक शक्तिपीठ में जाकर पूजा भी की थी।

आधुनिक विश्व और सनातन वैदिक हिन्दुत्व

अब बात आती है कि यह जो विशाल भूभाग पर पल्लवित पुष्पित सनातन संस्कृति रही है इसका शेष विश्व से क्या संबंध है। इससे पूर्व कि विषय के विस्तार में चलें, यहां एक उक्ति में यह लिखना समीचीन लगता है कि पृथ्वी यदि कहीं भी जीवन है और मनुष्य पहुँच सका है तो यह यकीन मानिए उसके मूल में सनातन वैदिक संस्कृति ही रही है जो किसी न किसी रूप में वहां की सभ्यता में आज भी विद्यमान है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब आज पश्चिम का आधुनिक विज्ञान भी यह मानने लगा है कि धरती पर मनुष्य तब से है जब तीनो अब्रह्मियन पंथों या मजहबो का कहीं दूर दूर तक अस्तित्व नही था। इन मजहबो का कुल इतिहास 4500 वर्ष पुराना है। सबसे पहले यहूदी, फिर इसाई और महज 1400 साल पहले इस्लाम। स्वाभाविक है कि इस काल खंड से पूर्व उन स्थानों पर जो मनुष्य रहते थे वे यदि यहूदी नही थे, इसाई नही थे, इस्लाम के नही थे तो कुछ अन्य उपासना पद्धति के तो रहे ही होंगे। आज दुनिया के अनेक देशों में पुरातात्विक या सामान्य खुदाई में जिस प्रकार से सनातन वैदिक संस्कृति के स्थापित देवी देवताओं की प्रतिमाएं मिल रही हैं , अब उन पर और उन स्थानों के नए इतिहास पर भी गहन शोध की आवश्यकता आ गयी है। मैक्सिको, अमेरिका, रूस, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, उजबेकिस्तान, किर्गिस्तान, तुर्की, सीरिया, इराक, स्पेन, इंडोनेशिया, चीन आदि सभी जगह पर हिन्दू धर्म से जुड़े साक्ष्य पाए गए हैं। विद्वानों अनुसार अरब की यजीदी, सबाइन, सबा, कुरैश आदि कई जातियों का प्राचीन धर्म सनातन हिन्दू वैदिक ही था। मैक्सिको में एक खुदाई के दौरान गणेश और लक्ष्मी की प्राचीन मूर्तियां पाई गईं थी। 'मैक्सिको' शब्द संस्कृत के 'मक्षिका' शब्द से आता है और मैक्सिको में ऐसे हजारों प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है। दूसरी ओर स्पेन में हजारों वर्ष पुराना एक मंदिर है जिस पर भगवान विष्णु की प्रतिमा अंकित है। जिस प्रकार के पुरातात्विक प्रमाण इस समय मिल रहे हैं वे प्रमाणित करते हैं कि विश्व की प्राचीन सभ्यताओं से सनातन वैदिक हिन्दू संस्कृति का सीधा जुड़ाव रहा है।पृथ्वी पर हिन्दू वैदिक धर्म ने ही लोगों को सभ्य बनाने के लिए अलग–अलग क्षेत्रों में धार्मिक विचारधारा की नए–नए रूप में स्थापना की थी। आज दुनियाभर की धार्मिक संस्कृति और समाज में हिन्दू धर्म की झलक देखी जा सकती है चाहे वह यहूदी, यजीदी, रोमा, पारसी, बौद्ध धर्म हो या ईसाई–इस्लाम जैसे मजहब ही क्यों न हो।भारतीय लोगों ने इस दौर में विश्वसभर में विशालकाय मंदिर, भवन और नगरों का निर्माण कार्य किया किया था। हिन्दू धर्म ने अपनी जड़ें यूरोप से लेकर एशिया तक फैला रखी थी, जिसके प्रमाण आज भी मिलते हैं। आज हम आपको विश्व की ऐसी ही जगहों के बारे में बता रहे हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि यहां कभी सनातन वैदिक हिन्दू धर्म अपने चरम पर हुआ करता था।

इंडोनेशिया

इसी क्रम में बहुत आवश्यक लगता है कि इंडोनेशिया की चर्चा की जाय। यहां के साक्ष्य ऐसे हैं जो अचंभित भी करते हैं और गर्व की अनुभूति भी कराते हैं।इंडोनेशिया कभी सनातन वैदिक हिन्दू राष्ट्र हुआ करता था, लेकिन इस्लामिक उत्थान के बाद यह आज मुस्लिम राष्ट्र है। शोधकर्ताओं का मानना है कि जहां आज इंडोनेशियन इस्लामिक यूनिवर्सिटी है वहां कभी हिन्दू मंदिर हुआ करता था, जिसमें शिव और गणेश की पूजा की जाती थी। यहां से एक ऐतिहासिक शिवलिंग भी मिला है। इंडोनेशिया के एक द्वीप है बाली जो हिन्दू बहुल क्षेत्र है। यहां के हिन्दुओं ने अपने धर्म और संस्कृति को नहीं छोड़ा था। बाली में

एक इमारत के निर्माण की खुदाई के दौरान मजदूरों को मंदिर के कुछ अंश मिले जिसके बाद यह खबर बाली के ऐतिहासिक संरक्षण विभाग को दी गई जिसने खुदाई करने पर एक विशाल हिन्दू इमारत को पाया, जो कभी हिन्दू धर्म का केंद्र था। यह विशालकाय मंदिर आज बाली द्वीप की पहचान बन गया है।

इंडोनेशिया के द्वीप बाली द्वीप पर हिन्दुओं के कई प्राचीन मंदिर हैं, जहां एक गुफा मंदिर भी है। इस गुफा मंदिर को गोवा गजह गुफा और एलीफेंटा की गुफा कहा जाता है। 19 अक्टूबर 1995 को इसे विश्व धरोहरों में शामिल किया गया। यह गुफा भगवान शंकर को समर्पित है। यहां 3 शिवलिंग बने हैं। देश–विदेश से पर्यटक इसे देखने आते हैं।

हमारे प्राचीन साहित्य और शास्त्रों में इसका विशद वर्णन आता है। सुकेश के तीन पुत्र थे– माली, सुमाली और माल्यवान। माली, सुमाली और माल्यवान नामक तीन दैत्यों द्वारा त्रिकुट सुबेल (सुमेरु) पर्वत पर बसाई गई थी लंकापुरी। माली को मारकर देवों और यक्षों ने कुबेर को लंकापति बना दिया था। रावण की माता कैकसी सुमाली की पुत्री थी। अपने नाना के उकसाने पर रावण ने अपनी सौतेली माता इलविल्ला के पुत्र कुबेर से युद्ध की ठानी थी और लंका को फिर से राक्षसों के अधीन लेने की सोची। रावण ने सुंबा और बाली द्वीप को जीतकर अपने शासन का विस्तार करते हुए अंगद्वीप, मलय द्वीप, वराह द्वीप, शंख द्वीप, कुश द्वीप, यव द्वीप और आंध्रालय पर विजय प्राप्त की थी। इसके बाद रावण ने लंका को अपना लक्ष्य बनाया। लंका पर कुबेर का राज्य था, परंतु पिता ने लंका के लिए रावण को दिलासा दी तथा कुबेर को कैलाश पर्वत के आसपास के त्रिविष्टप (तिब्बत) क्षेत्र में रहने के लिए कह दिया। इसी तारतम्य में रावण ने कुबेर का पुष्पक विमान भी छीन लिया। आज के युग अनुसार रावण का राज्य विस्तार, इंडोनेशिया, मलेशिया, बर्मा, दक्षिण भारत के कुछ राज्य और संपूर्ण श्रीलंका पर रावण का राज था।

कंबोज, कम्पूचिया अब कंबोडिया

अब बात करते हैं कंबोज देश यानी आधुनिक कंबोडिया की। विश्व का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर परिसर तथा विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक कंबोडिया में स्थित है। यह कंबोडिया के अंकोर में है जिसका पुराना नाम 'यशोधरपुर' था। इसका निर्माण सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय (1112–53ई.) के शासनकाल में हुआ था। यह विष्णु मन्दिर है जबकि इसके पूर्ववर्ती शासकों ने प्रायः शिवमंदिरों का निर्माण किया था। कंबोडिया में बड़ी संख्या में हिन्दू और बौद्ध मंदिर हैं, जो इस बात की गवाही देते हैं कि कभी यहां भी हिन्दू धर्म अपने चरम पर था। पौराणिक काल का कंबोजदेश कल का कंपूचिया और आज का कंबोडिया। पहले हिंदू रहा और फिर बौद्ध हो गया। सदियों के काल खंड में 27 राजाओं ने राज किया। कोई हिंदू रहा, कोई बौद्ध। यही वजह है कि पूरे देश में दोनों धर्मों के देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बिखरी पड़ी हैं। भगवान बुद्ध तो हर जगह हैं ही, लेकिन शायद ही कोई ऐसी खास जगह हो, जहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश में से कोई न हो और फिर अंगकोर वाट की बात ही निराली है। ये दुनिया का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर है।

विश्व विरासत में शामिल अंगकोर वाट मंदिर–समूह को अंगकोर के राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने बारहवीं सदी में बनवाया था। चौदहवीं सदी में बौद्ध धर्म का प्रभाव बढ़ने पर शासकों ने इसे बौद्ध स्वरूप दे दिया। बाद की सदियों में यह गुमनामी के अंधेरे में खो गया। एक फ्रांसिसी पुरातत्वविद ने इसे खोज निकाला। आज यह मंदिर जिस रूप में है, उसमें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का बहुत योगदान है। सन् 1986 से 93 तक एएसआई ने यहाँ संरक्षण का काम किया था। अंगकोर वाट की दीवारें रामायण और महाभारत की कहानियाँ कहती हैं। यह मंदिर लगभग एक स्क्वेयर मील क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहां की दीवारों पर पर छपे चित्र और उकेरी गई मूर्तियां हिन्दू धर्म के गौरवशाली इतिहास की कहानी को बयां करती हैं। सीताहरण, हनुमान का अशोक वाटिका में प्रवेश, अंगद प्रसंग, राम–रावण युद्ध, महाभारत जैसे अनेक दृश्य बेहद बारीकी से उकेरे गए हैं। अंगकोर वाट के आसपास कई प्राचीन मंदिर और उनके भग्नावशेष मौजूद हैं। इस क्षेत्र को अंगकोर पार्क कहा जाता है। सियाम रीप क्षेत्र अपने आगोश में सवा तीन सौ से ज्यादा मंदिर समेटे हुए है।

रूस में सनातन वैदिक हिन्दुत्व

अब चर्चा करते हैं आधुनिक विश्व की एक महाशक्ति रूस की प्राचीनता के बारे में । यहां तो सनातन संस्कृति के प्रमाणों के अकूत भंडार ही दिखता है।

अभी महज एक हजार वर्ष पहले रूस ने ईसाई धर्म स्वीकार किया। माना जाता है कि इससे पहले यहां असंगठित रूप से

हिन्दू धर्म प्रचलित था और उससे भी पहले संगठित रूप से वैदिक पद्धति के आधार पर हिन्दू धर्म प्रचलित था। वैदिक धर्म का पतन होने के कारण यहां मनमानी पूजा और पुजारियों का बोलबाला हो गया अर्थात हिन्दू धर्म का पतन हो गया।

यही कारण था कि 10वीं शताब्दी के अंत में रूस की कियेव रियासत के राजा व्लादीमिर चाहते थे कि उनकी रियासत के लोग देवी–देवताओं को मानना छोड़कर किसी एक ही ईश्वर की पूजा करें। इसके बाद रूसी राजा व्लादीमिर ने यह तय कर लिया कि वह और उसकी कियेव रियासत की जनता ईसाई धर्म को ही अपनाएंगे। रूस की कियेव रियासत के राजा व्लादीमिर ने जब आर्थोडॉक्स ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और अपनी जनता से भी इस धर्म को स्वीकार करने के लिए कहा तो उसके बाद भी कई वर्षों तक रूसी जनता अपने प्राचीन देवी और देवताओं की पूजा भी करते रहे थे। बाद में ईसाई पादरियों के निरंतर प्रयासों के चलते रूस में ईसाई धर्म का व्यापक प्रचार–प्रसार हो सका है और धीरे–धीरे रूस के प्राचीन धर्म को नष्ट कर दिया गया। प्राचीनकाल के रूस में लोग जिन शक्तियों की पूजा करते थे, उन्हें तथाकथित विद्वान लोग अब प्रकृति–पूजा कहकर पुकारते हैं। सबसे प्रमुख देवता थे– विद्युत देवता या बिजली देवता। आसमान में चमकने वाले इस वज्र–देवता का नाम पेरून था। कोई भी संधि या समझौता करते हुए इन पेरून देवता की ही कसमें खाई जाती थीं और उन्हीं की पूजा मुख्य पूजा मानी जाती थी। प्राचीनकाल में रूस के दो और देवताओं के नाम थे– रोग और स्वारोग। सूर्य देवता के उस समय के जो नाम हमें मालूम हैं, वे हैं– होर्स, यारीला और दाझबोग। सूर्य के अलावा प्राचीनकालीन रूस में कुछ मशहूर देवियां भी थीं जिनके नाम हैं– बिरिगिन्या, दीवा, जीवा, लादा, मकोश और मरेना। प्राचीनकालीन रूस की यह मरेना नाम की देवी जाड़ों की देवी थी और उसे मौत की देवी भी माना जाता था। हिन्दी का शब्द मरना कहीं इसी मरेना देवी के नाम से तो पैदा नहीं हुआ? इसी तरह रूस का यह जीवा देवता कहीं हिन्दी का 'जीव' ही तो नहीं? 'जीव' यानी हर जीवंत आत्मा। रूस में यह जीवन की देवी थी। रूस में आज भी पुरातत्ववेताओं को कभी–कभी खुदाई करते हुए प्राचीन रूसी देवी–देवताओं की लकड़ी या पत्थर की बनी मूर्तियां मिल जाती हैं। कुछ मूर्तियों में दुर्गा की तरह अनेक सिर और कई–कई हाथ बने होते हैं। रूस के प्राचीन देवताओं और हिन्दू देवी–देवताओं के बीच बहुत ज्यादा समानता है। ध्यान देने वाला तथ्य यह है कि प्राचीनकाल में रूस के मध्यभाग को जम्बूद्वीप का इलावर्त कहा जाता था। यहां देवता और दानव लोग रहते थे। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही रूस में वोल्गा प्रांत के स्ताराया मायना गांव में विष्णु की मूर्ति मिली थी जिसे 7–10वीं ईस्वी सन् का बताया गया। यह गांव 1700 साल पहले एक प्राचीन और विशाल शहर हुआ करता था। स्ताराया मायना का अर्थ होता है गांवों की मां। उस काल में यहां आज की आबादी से 10 गुना ज्यादा आबादी में लोग रहते थे। माना जाता है कि रूस में वाइकिंग या स्लाव लोगों के आने से पूर्व शायद वहां भारतीय होंगे या उन पर भारतीयों ने राज किया होगा।

अब ध्यान देने वाली बात यह है कि महाभारत में अर्जुन के उत्तर–कुरु तक जाने का उल्लेख है। कुरु वंश के लोगों की एक शाखा उत्तरी ध्रुव के एक क्षेत्र में रहती थी। उन्हें उत्तर कुरु इसलिए कहते हैं, क्योंकि वे हिमालय के उत्तर में रहते थे। महाभारत में उत्तर–कुरु की भौगोलिक स्थिति का जो उल्लेख मिलता है वह रूस और उत्तरी ध्रुव से मिलता–जुलता है। अर्जुन के बाद बाद सम्राट ललितादित्य मुक्तापिद और उनके पोते जयदीप के उत्तर कुरु को जीतने का उल्लेख मिलता है। यह विष्णु की मूर्ति शायद वही मूर्ति है जिसे ललितादित्य ने स्त्री राज्य में बनवाया था। चूंकि स्त्री राज्य को उत्तर कुरु के दक्षिण में कहा गया है तो शायद स्ताराया मैना पहले स्त्री राज्य में हो।

उत्खनन में 2007 को यहां एक विष्णु मूर्ति पाई गई । इस स्थान पर 7 वर्षों से उत्खनन कर रहे समूह के डॉ. कोजविनका कहना है कि मूर्ति के साथ ही अब तक किए गए उत्खनन में उन्हें प्राचीन सिक्के, पदक, अंगूठियां और शस्त्र भी मिले हैं। मौजूदा रूस की जगह पहले ग्रैंड डची ऑफ मॉस्को का गठन हुआ। आमतौर से यह माना जाता है कि ईसाई धर्म करीब 1,000 वर्ष पहले रूस के मौजूदा इलाके में फैला। यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार रूसी भाषा के करीब 2,000 शब्द संस्कृत मूल के हैं। यूक्रेन की राजधानी कीव से भी पहले का यह गांव 1,700 साल पहले आबाद था। अब तक कीव को रूस के सभी शहरों की जन्मस्थली माना जाता रहा है, लेकिन अब यह अवधारणा बदल गई है।

दक्षिण अफ्रीका में आदिदेव भगवान शिव सनातन संस्कृति में आदिदेव भगवान शिव सर्वत्र विद्यमान हैं। इसीलिए विश्व मे किसी न किसी रूप में उनके विग्रहों अथवा शिवलिंग की उपस्थिति है।

दक्षिण अफ्रीका में आदिदेव भगवान शिव सनातन संस्कृति में आदिदेव भगवान शिव सर्वत्र विद्यमान हैं। इसीलिए विश्व मे किसी न किसी रूप में उनके विग्रहों अथवा शिवलिंग की उपस्थिति है ही।

भगवान शिव कहां नहीं हैं ? कहते हैं कण–कण में हैं शिव, कंकर–कंकर में हैं भगवान शंकर। कैलाश में शिव और काशी में भी शिव और अब अफ्रीका में शिव। दक्षिण अफ्रीका में भी शिव की मूर्ति का पाया जाना इस बात का प्रमाण है कि आज से 6 हजार वर्ष पूर्व अफ्रीकी लोग भी हिंदू धर्म का पालन करते थे। दक्षिण अफ्रीका के सुद्वारा नामक एक गुफा में पुरातत्वविदों को महादेव की 6 हजार वर्ष पुरानी शिवलिंग की मूर्ति मिली जिसे कठोर ग्रेनाइट पत्थर से बनाया गया है। इस शिवलिंग को

खोजने वाले पुरातत्ववेत्ता हैरान हैं कि यह शिवलिंग यहां अभी तक सुरक्षित कैसे रहा। हाल ही में दुनिया की सबसे ऊंची शिवशक्ति की प्रतिमा का अनावरण दक्षिण अफ्रीका में किया गया। इस प्रतिमा में भगवान शिव और उनकी शक्ति अर्धांगिनी पार्वती भी हैं। बेनोनी शहर के एकटोनविले में यह प्रतिमा स्थापित की गई। हिन्दुओं के आराध्य शिव की प्रतिमा में आधी आकृति शिव और आधी आकृति मां शक्ति की है। 10 कलाकारों ने 10 महीने की कड़ी मेहनत के बाद इस प्रतिमा को तैयार किया है। ये कलाकार भारत से आए थे। इस 20 मीटर ऊंची प्रतिमा को बनाने में 90 टन के करीब स्टील का इस्तेमाल हुआ है।

अमेरिका में हिन्दुत्व के प्रमाण

सेंट्रल अमेरिका के मोस्कुइटीए में शोधकर्ता चार्ल्स लिन्द्बेर्ग ने एक ऐसी जगह की खोज की है जिसका नाम उन्होंने ला स्यूदाद ब्लैंका दिया है जिसका स्पेनिश में मतलब व्हाइट सिटी होता है, जहां के स्थानीय लोग बंदरों की मूर्तियों की पूजा करते हैं।

चार्ल्स का मानना है कि यह वही खो चुकी जगह है जहां कभी पवन पुत्र हनुमान जी का साम्राज्य हुआ करता था। एक अमेरिकन एडवेंचरर ने लिम्बर्ग की खोज के आधार पर गुम हो चुके 'स्वेज ब्जल व्िडवदामल ळवक' की तलाश में निकले। 1940 में उन्हें इसमें सफलता भी मिली पर उसके बारे में मीडिया को बताने से एक दिन पहले ही एक कार दुर्घटना में उनकी मौत हो गई और यह राज एक राज ही बनकर रह गया। अमेरिका की प्राचीन माया सभ्यता ग्वाटेमाला, मैक्सिको, पेरू, होंडुरास तथा यूकाटन प्रायद्वीप में स्थापित थी। यह एक कृषि पर आधारित सभ्यता थी। 250 ईस्वी से 900 ईस्वी के बीच माया सभ्यता अपने चरम पर थी। इस सभ्यता में खगोल शास्त्र, गणित और कालचक्र को काफी महत्व दिया जाता था। मैक्सिको इस सभ्यता का गढ़ था। आज भी यहां इस सभ्यता के अनुयायी रहते हैं। यूं तो इस इलाके में ईसा से 10 हजार साल पहले से बसावट शुरू होने के प्रमाण मिले हैं और 1800 साल ईसा पूर्व से प्रशांत महासागर के तटीय इलाक़ों में गांव भी बसने शुरू हो चुके थे। लेकिन कुछ पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि ईसा से कोई एक हजार साल पहले माया सभ्यता के लोगों ने आनुष्ठानिक इमारतें बनाना शुरू कर दिया था और 600 साल ईसा पूर्व तक बहुत से परिसर बना लिए थे।

सन् 250 से 900 के बीच विशाल स्तर पर भवन निर्माण कार्य हुआ, शहर बसे। उनकी सबसे उल्लेखनीय इमारतें पिरामिड हैं, जो उन्होंने धार्मिक केंद्रों में बनाईं लेकिन फिर सन् 900 के बाद माया सभ्यता के इन नगरों का ह्रास होने लगा और नगर खाली हो गए। अमेरिकन इतिहासकार मानते हैं कि भारतीयो ने ही अमेरिका महाद्वीप पर सबसे पहले बस्तियां बनाई थीं। अमेरिका के रेड इंडियन वहां के आदि निवासी माने जाते हैं और हिन्दू संस्कृति वहां पर आज से हजारों साल पहले पहुंच गई थी। माना जाता है कि यह बसाहट महाभारतकाल में हुई थी।

चिली, पेरू और बोलीविया

अमेरिकन महाद्वीप के बोलीविया (वर्तमान में पेरू और चिली) में हिन्दुओं ने प्राचीनकाल में अपनी बस्तियां बनाईं और कृषि का भी विकास किया। यहां के प्राचीन मंदिरों के द्वार पर विरोचन, सूर्य द्वार, चन्द्र द्वार, नाग आदि सब कुछ हिन्दू धर्म समान हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका की आधिकारिक सेना ने नेटिव अमेरिकन की एक 45वीं मिलिट्री इन्फैंट्री डिवीजन का चिह्न एक पीले रंग का स्वास्तिक था। नाजियों की घटना के बाद इसे हटाकर उन्होंने गरूड़ का चिह्न अपनाया।

चीन में सनातन वैदिक हिन्दू संस्कृति

चीन के इतिहासकारों के अनुसार चीन के समुद्र से लगे औद्योगिक शहर च्वानजो में और उसके चारों ओर का क्षेत्र कभी हिन्दुओं का तीर्थस्थल था। वहां 1,000 वर्ष पूर्व के निर्मित हिन्दू मंदिरों के खंडहर पाए गए हैं। इसका सबूत चीन के समुद्री संग्रहालय में रखी प्राचीन मूर्तियां हैं। वर्तमान में चीन में कोई हिन्दू मंदिर तो नहीं है, लेकिन 1,000 वर्ष पहले सुंग राजवंश के दौरान दक्षिण चीन के फुच्यान प्रांत में इस तरह के मंदिर थे लेकिन अब सिर्फ खंडहर बचे हैं।

सनातन से सम्बद्ध यजीदी

इस्लामिक आतंकवाद के चलते यजीदी अब खत्म हो रही मनुष्य की विशिष्ट प्रजाति में शामिल हो चुके हैं। यजीदी धर्म भी विश्व की प्राचीनतम धार्मिक परंपराओं में से एक है। इस कुछ इतिहासकार हिन्दू धर्म का ही एक समाज मानते हैं। यजीदियों की गणना के अनुसार अरब में यह परंपरा 6,763 वर्ष पुरानी है अर्थात ईसा के 4,748 वर्ष पूर्व यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों से पहले से यह परंपरा चली आ रही है। यजीदी मंदिर की इस तस्वीर से यह सिद्ध हो जाएगा कि ये सभी हिन्दू हैं। शोध से पता चलता है कि यजीदियों का यजीद या ईरानी शहर यज्द से कोई लेना–देना नहीं। उनका संबंध फारसी भाषा के 'इजीद' से है जिसके मायने फरिश्ता है। इजीदिस के

मायने हैं 'देवता के उपासक' और यजीदी भी खुद को यही कहते हैं। यजीदियों की कई मान्यताएं हिन्दू और ईसाइयत से भी मिलती–जुलती हैं। ईसाइयत के आरंभिक दिनों में मयूर पक्षी को अमरत्व का प्रतीक माना जाता था। बाद में इसे हटा दिया गया। यजीदी का शाब्दिक अर्थ 'ईश्वर के पूजक' होता है। ईश्वर को 'यजदान' कहते हैं। यजीदी अपने ईश्वर को 'यजदान' कहते हैं। यजदान से 7 महान आत्माएं निकलती हैं जिनमें मयूर एंजेल है जिसे मलक ताउस कहा जाता है। मयूर एंजेल को दैवीय इच्छाएं पूरा करने वाला माना जाता है। यजीदी ईश्वएर को इतना ऊपर मानते हैं कि उनकी सीधे उपासना नहीं की जाती। धार्मिक परंपराओं में जल से अभिषेक किए जाने की परंपरा है। तिलक लगाते हैं और अपने मंदिर में दीपक जलाते हैं। हिन्दू देतता कार्तिकेय जैसे दिखाई देने वाले देवता की पूजा करते हैं। उनके मंदिर और हिन्दुओं के मंदिर समान नजर आते हैं। पुनर्जन्म को मानते हैं। यजीदी अपने ईश्व र की 5 समय प्रार्थना करते हैं। सूर्योदय व सूर्यास्त में सूर्य की ओर मुंह करके प्रार्थना की जाती है। स्वर्ग–नरक की मान्यता भी है। धार्मिक संस्कार कराने वाले विशेषज्ञों की परंपरा है। व्रत, मेले, उत्सव की परंपरा भी है। समाधियां व पूजागृह (मंदिर) भी हैं। इनकी धार्मिक भाषा कुरमांजी है, जो प्राचीन परशियन (ईरान) की शाखा है। पृथ्वी, जल व अग्नि में थूकने को पाप समझते हैं।

वियतनाम

वियतनाम का इतिहास 2,700 वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। वियतनाम का पुराना नाम चम्पा था। चम्पा के लोग और चाम कहलाते थे। वर्तमान समय में चाम लोग वियतनाम और कम्बोडिया के सबसे बड़े अल्पसंख्यक हैं। आरम्भ में चम्पा के लोग और राजा शैव थे लेकिन कुछ सौ साल पहले इस्लाम यहां फैलना शुरु हुआ। हालांकि संपूर्ण वियतनाम पर चीन का राजवंशों का शासन ही अधिक रहा। दूसरी शताब्दी में स्थापित चंपा भारतीय संस्कृति का प्रमुख केंद्र था। यहां के चम लोगों ने भारतीय धर्म, भाषा, सभ्यता ग्रहण की थी। 1825 में चंपा के महान हिन्दू राज्य का अंत हुआ। श्री भद्रवर्मन् जिसका नाम चीनी इतिहास में फन–हु–ता (380–413 ई.) मिलता है, चंपा के प्रसिद्ध सम्राटों में से एक थे जिन्होंने अपनी विजयों ओर सांस्कृतिक कार्यों से चंपा का गौरव बढ़ाया। किंतु उसके पुत्र गंगाराज ने सिंहासन का त्याग कर अपने जीवन के अंतिम दिन भारत में आकर गंगा के तट पर व्यतीत किए। चम्पा संस्कृति के अवशेष वियतनाम में अभी भी मिलते हैं। इनमें से कई शैव मन्दिर हैं।

मलेशिया

मलेशिया वर्तमान में एक मुस्लिम राष्ट्र है लेकिन पहले ये एक हिन्दू राष्ट्र था। मलय प्रायद्वीप का दक्षिणी भाग मलेशिया देश के नाम से जाना जाता है। इसके उत्तर में थाइलैण्ड, पूर्व में चीन का सागर तथा दक्षिण और पश्चिम में मलाक्का का जलडमरूमध्य है। उत्तर मलेशिया में बुजांग घाटी तथा मरबाक के समुद्री किनारे के पास पुराने समय के अनेक हिन्दू तथा बौद्ध मंदिर आज भी हैं। मलेशिया अंग्रेजों की गुलामी से 1957 में मुक्त हुआ। वहां पहाड़ी पर बटुकेश्वर का मंदिर है जिसे बातू गुफा मन्दिर कहते हैं। वहां पहुंचने के लिए लगभग 276 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। पहाड़ी पर कुछ प्राचीन गुफाएं भी हैं। पहाड़ी के पास स्थित एक बड़े मंदिर देखने में हनुमानजी की भी एक भीमकाय मूर्ति लगी है।

सिंगापुर

सिंगापुर एक छोटा सा राष्ट्र है। यह ब्राईदेश दक्षिण में मलय महाद्वीप के दक्षिण सिरे के पास छोटा–सा द्वीप है। इसके उत्तर में मलेशिया का किनारा, पूर्व की ओर चीन का समुद्र और दक्षिण–पश्चिम की ओर मलक्का का जलडमरू– मध्य है। 14वीं सदी तक सिंगापुर टेमासेक नाम से जाना जाता था। सुमात्रा के पॉलेमबग का राजपुत्र संगनीला ने इसे बासाया था तब इसका नाम सिंहपुर था। यहां इस बात के चिन्ह मिलते हैं कि उनका कभी हिन्दू धर्म से भी निकट का संबंध था। 1930 तक उनकी भाषा में संस्कृत भाषा के शब्दों का समावेश है। उनके नाम हिन्दुओं जैसे होते थे और कुछ नाम आज भी अपभ्रंश रूप में हिन्दू नाम ही हैं।

थाइलैंड

थाइलैंड एक बौद्ध राष्ट्र है। यहां पर प्राचीनकाल में हिन्दू और बौद्ध दोनों ही धर्म और संस्कृति का एक साथ प्रचलन था लेकिन अब हिन्दू नगण्य है। खैरात के दक्षिण–पूर्व में कंबोडिया की सीमा के पास उत्तर में लगभग 40 कि.मी. की दूरी पर युरिराम प्रांत में प्रसात फ्नाम रंग नामक सुंदर मंदिर है। यह मंदिर आसपास के क्षेत्र से लगभग 340 मी. ऊंचाई पर एक सुप्त ज्वालामुखी के मुख के पास स्थित है। इस मंदिर में शंकर तथा विष्णु की अति सुंदर मूर्ति हैं।

फिलीपींस

फिलीपींस में किसी समय भारतीय संस्कृति का पूर्ण प्रभाव था, पर 15वीं शताब्दी में मुसलमानों ने आक्रमण कर वहां आधिपत्य जमा लिया। आज भी फिलीपींस में कुछ हिन्दू रीति–रिवाज प्रचलित हैं।

जर्मनी

जर्मनी तो खुद को आर्य मानते ही हैं। लेकिन आश्चर्य की जर्मन में 40 हजार साल पुरानी भगवान नरसिंह की मूर्ति मिली। ये मूर्ति सन 1939 में पाई गई थी। ये मूर्ति इंसानों की तरह दिखने वाले शेर की है। जिसकी लंबाई 29.6 सेंटीमीटर (11.7 सेमी) है। कॉर्बन डेटिंग पद्धति से बताया गया है कि यह लगभग 40 हजार साल पुरानी है। ये मूर्ति होहलंस्टैंन स्टैडल, जर्मन घाटी क्षेत्र में मिली थी। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने के बाद गायब हो गई थी। बाद में उसे खोजा गया। ये मूर्ति खंडित अवस्था में मिली थी और 1997–1998 के दौरान कुछ लोगों ने उसे जोड़ा। सन् 2015 में उसे म्यूजियम में रखा गया।

चिर पुरातन "भारत"

अपने देश के नाम पर विवाद हो रहा है। 'भारत' और 'इण्डिया' में द्वंद्व जारी है। सर्वश्रेष्ठ नाम तो 'भारतवर्ष' है। संविधानसम्मत नाम 'भारत' है जिसे यूनानियों और बाद में यूरोपवालों ने 'इण्डिया' कहा है।

अपने देश का नामकरण (भारतवर्ष) किस भरत के नाम पर हुआ? अनेक 'विद्वान' डेढ़ सौ वर्ष से तोते की तरह रट रहे हैं कि दुष्यन्तपुत्र भरत (जो सिंह के दांत गिनता था) के नाम पर इस देश का नामकरण 'भारत' हुआ है।

हमारे पुराणों में बताया गया है कि प्रलयकाल के पश्चात् स्वायम्भुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रियव्रत ने रात्रि में भी प्रकाश रखने की इच्छा से ज्योतिर्मय रथ के द्वारा सात बार भूमण्डल की परिक्रमा की। परिक्रमा के दौरान रथ की लीक से जो सात मण्डलाकार गड्ढे बने, वे ही सप्तसिंधु हुए। फिर उनके अन्तर्वर्ती क्षेत्र सात महाद्वीप हुए जो क्रमशः जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप कहलाए। ये द्वीप क्रमशः दुगुने बड़े होते गए हैं और उनमें जम्बूद्वीप सबके बीच में स्थित है–

'जम्बूद्वीपः समस्तानामेतेषां मध्यसंस्थितः'

(ब्रह्ममहापुराण, 18.13)

प्रियव्रत के 10 पुत्रों में से 3 के विरक्त हो जाने के कारण शेष 7 पुत्रकृ आग्नीध्र, इध्मजिह्व, यज्ञबाहु, हिरण्यरेता, घृतपृष्ट, मेधातिथि और वीतिहोत्र क्रमशः जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप के अधिपति हुए।

प्रियव्रत ने अपने पुत्र आग्नीध्र को जम्बूद्वीप दिया था–

'जम्बूद्वीपं महाभाग साग्नीध्राय ददौ पिता'
मेधातिथेस्तथा प्रादात्प्लक्षद्वीपं तथापरम् ।।'

(विष्णुमहापुराण, 2.1.12)

जम्बूद्वीपाधिपति आग्नीध्र के 9 पुत्र हुए– नाभि, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत्त, रम्यक, हिरण्यमय, कुरु, भद्राश्व तथा केतुमाल। सम विभाग के लिए आग्नीध्र ने जम्बूद्वीप के 9 विभाग करके उन्हें अपने पुत्रों में बाँट दिया और उनके नाम पर ही उन विभागों के नामकरण हुए–

'आग्नीध्रसुतास्तेमातुरनुग्रहादोत्पत्तिकेनेव संहननबलोपेताः पित्रा विभक्ता आत्म तुल्यनामानियथाभागं जम्बूद्वीपवर्षाणि बुभुजः'

(भागवतमहापुराण, 5.2.21; मार्कण्डेयमहापुराण, 53.31–35)

पिता (आग्नीध्र) ने दक्षिण की ओर का 'हिमवर्ष' (जिसे अब 'भारतवर्ष' कहते हैं) नाभि को दिया–

'पिता दत्तं हिमाह्वं तु वर्षं नाभेस्तु दक्षिणम'

(विष्णुमहापुराण, 2.1.18)

आठ विभागों के नाम तो 'किंपुरुषवर्ष', 'हरिवर्ष' आदि ही हुए, किंतु ज्येष्ठ पुत्र का भाग 'नाभि' से 'अजनाभवर्ष' हुआ। नाभि के एक ही पुत्र ऋषभदेव थे जो बाद में (जैनों के) प्रथम तीर्थंकर हुए। ऋषभदेव के एक सौ पुत्र हुए जिनमें भरत सबसे बड़े थे । ऋषभदेव ने वन जाते समय अपना राज्य भरत को दे दिया था, तभी से उनका खण्ड 'भारतवर्ष' कहलाया–

'ऋषभाद्भरतोः जज्ञे ज्येष्ठः पुत्राशतस्य सः ।'
'ततश्च भारतं वर्षमेतल्लोकेषु गीयते ।
भरताय यतः पित्रा दत्तं प्रतिष्ठिता वनम् ।।

(विष्णुमहापुराण, 2.1.28; कूर्ममहापुराण, ब्राह्मीसंहिता, पूर्व, 40–41)

'येषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीद्येनेदं वर्षं भारतमिति व्यदिशन्ति'

(भागवतमहापुराण, 5.4.9)

'तेषां वै भरतो ज्येष्ठो नारायणपरायणः ।
विख्यातं वर्षमेतद् यन्नाम्ना भरतमद्भुतम् ।।'

(भागवतमहापुराण, 11.2.17)

'ऋषभो मेरुदेव्यां च ऋषभाद् भरतोऽभवत् ।
भरताद् भारतंवर्षं भरतात् सुमतिस्त्वभूत् ।।'

(अग्निमहापुराण, 107.11)

'नाभे पुत्रात्तु ऋषभाद् भरतो याभवत् ततः ।
तस्य नाम्ना त्विदंवर्षं भारतं येति कीर्त्यते ।।'

(नृसिंहपुराण, 30; स्कन्दमहापुराण, 1.2.37.57)

उसी दिन से इस देश का नाम 'भारतवर्ष' हो गया जो आज तक है।

(ऋषभदेव का) अजनाभवर्ष ही भरत के नाम पर 'भारतवर्ष' कहलाया–

'अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति यत आरभ्य व्यपदिशन्ति'

(भागवतमहापुराण, 5.7.3)

चूँकि ऋषभदेव ने अपने 'हिमवर्ष' नामक दक्षिणी खण्ड को अपने पुत्र भरत को दिया था, इसी कारण उसका नाम भरत के नामानुसार 'भारतवर्ष' पड़ा–

'नाभेस्तु दक्षिणं वर्षं हेमाख्यं तु पिता ददौ'

(लिंगमहापुराण, 47.6)

'हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत् ।
तस्मात् तद् भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधः ।।'

(वायुपुराण, 33.52; ब्रह्माण्डमहापुराण, 2.14.62; लिंगमहापुराण, 47.23–24)

'हिमाह्वंदक्षिणंवर्षं भरतायपिताददौ ।
तस्मात्तु भारतंवर्षं तस्यनाम्नामहात्मनः ।।'

(मार्कण्डेयमहापुराण, 50.40—41)

'इदं हैमवतं वर्षं भारतं नाम विश्रुतम् ।।'

(मत्स्यमहापुराण, 113.28)

पाश्चात्य इतिहासकारों को तो यह सिद्ध करना था कि यह देश (भारतवर्ष) बहुत प्राचीन नहीं है, केवल पाँच हज़ार वर्ष का ही इसका इतिहास है। इसलिए उन्होंने बताया कि स्वायम्भुव मनु, प्रियव्रत, नाभि, ऋषभदेव, आदि तो कभी हुए ही नहीं, ये सब पुराणों की कल्पनाएँ हैं । 'पुराणों के विद्वान' (?) कहे जानेवाले फ्रेडरिक ईडन पार्जीटर (1852—1927) ने अपने ग्रन्थ (Ancient Indian Historical Traditions [Oxford University Press] London, 1922) में स्वायम्भुव मनु से चाक्षुस मनु तक के इतिहास को लुप्त कर दिया। दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश के अनेक स्वनामधान्य इतिहासकारों ने भी पाश्चात्यों का अंधानुकरण करते हुए हमारी प्राचीन परम्परा को बर्बादकर दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम से ही अपने देश का नामकरण माना।

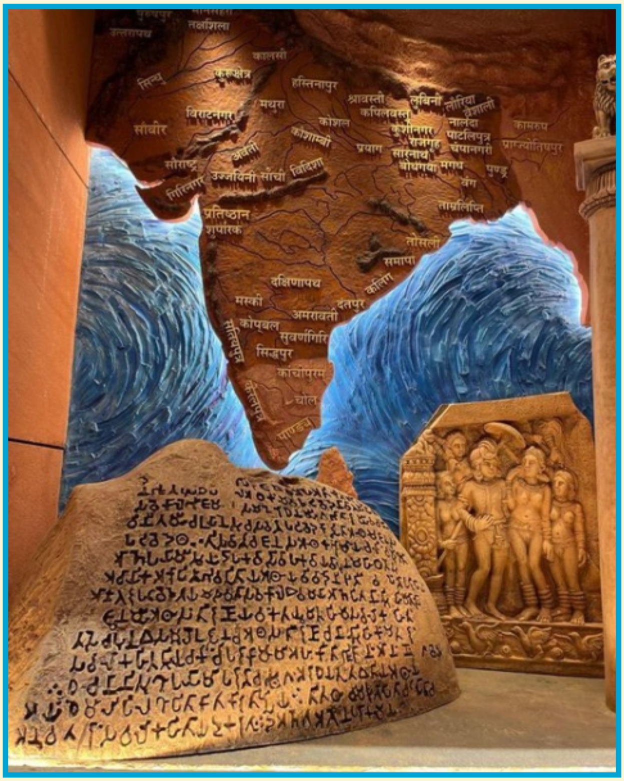

डा. राधाकुमुद मुखर्जी — जैसे विद्वान् तक ने अपने ग्रन्थ (Fundamental Unity of India) (Bharatiya Vidya Bhawan] Bombay) में लगता है सुनी—सुनाई बातों के आधार पर ही दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम से अपने देश का नामकरण माना है। कहाँ तक कहा जाए ! आधुनिक काल के इतिहासकारों ने किस प्रकार भारतीय इतिहास का सर्वनाश किया है, यह व्यापक अनुसन्धान का विषय है।

'भारतवर्ष' शब्द की व्युत्पत्ति बताते हुए श्रीश्री आनन्दमूर्ति (प्रभात रंजन सरकारः 1921—1990) ने लिखा है : 'दो धातुओं का योग— भृ भरणे तथा तन् विस्तारे। भृ+अल् एवं तन्+ऽ से 'भारत' शब्द बना है। 'भर' का अर्थ है भरण—पोषण करने वाला एवं 'तन' माने विस्तार करने वाला, क्रम—क्रम से बढ़ने वाला.... इस तरह 'भारत' शब्द बना । वर्ष का अर्थ है भूमि। अतः इस भूमिखण्ड के लिए 'भारतवर्ष' नाम अत्यन्त सार्थक है।'

(महाभारत की कथाएँ, पृष्ठ 7, आनन्दमार्ग प्रचारक संघ, कलकत्ता, 1981 ई.)

गोस्वामी तुलसीदास (1497—1623) ने भी 'भरत' के नामकरण—प्रसंग में उल्लेख किया है—

'बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।'

(श्री राम चरित मानस, बालकाण्ड, 196.7)

अस्तु ! हमारे किसी भी ग्रन्थ में दुष्यन्तपुत्र भरत से 'भारत' नामकरण की बात नहीं कही गयी है। चन्द्रवंशीय दुष्यन्तपुत्र भरत वैवस्वत मन्वन्तर के 16वें सत्ययुग (5.4005 करोड वर्ष पूर्व) में हुए थे जबकि देश का नामकरण 'भारतवर्ष' स्वायम्भुव मन्वन्तर (1.955885 अरब वर्ष पूर्व) में ही हो चुका था। हाँ, दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम पर क्षत्रियों की एक शाखा 'भरतवंश' अवश्य प्रचलित हुई जिसके कारण अर्जुन, धृतराष्ट्र आदि को 'भारत' कहा गया है और यह महाभारत (आदिपर्व, 74.123) के—

'येनेदं भारतं कुलम् ।
अपरे ये च पूर्वे वै
भारता इति विश्रुताः ।।'

से भी स्पष्ट है । 'भारता' शब्द बहुवचन है अतएव बहुत—से मनुष्यों का वाचक है । कुल तो स्पष्ट है ही । महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रन्थ 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' में दुष्यन्तपुत्र भरत के नाम पर अपने देश का नामकरण होने की बात नहीं कही है। इसलिए स्वायम्भुव मन्वन्तर में ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर ही इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' हुआ था, यह सिद्ध है।

ऋषभदेव—पुत्र भरत की मृत्यु के बाद उनके वंशजों ने भारतवर्ष को पुनः 9 विभागों में बाँटा—

तैरिदं भारतं वर्षं नवभेदामलंकृतम्

—विष्णुमहापुराण, 2.1.41

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदान्निशामय।

वही, 2.3.6; ब्रह्मपुराण, 19.6

श्रृणुध्वं भारतंवर्षं नवभेदेन भो द्विजाः।

—ब्रह्मपुराण, 27.14

एवं तु भारतं वर्षं नवसंस्थान संस्थितम्।

–वही, 27.65

भारतस्यास्य वर्षस्य नवभेदाः प्रकीर्तिताः।

–वायुपुराण, 45.78; विष्णुधर्मोत्तरपुराण, 1.8.2

आक्रम्य भारतं वर्षं नवभेदमिदं द्विज।

–मार्कण्डेयमहापुराण, 58.3

इन्द्रद्वीपखण्ड, कसेरुखण्ड, ताम्रपर्णखण्ड, गभस्तिमान्खण्ड, नागद्वीपखण्ड, सौम्यखण्ड, गन्धर्वखण्ड, वारुणखण्ड तथा नवाँ सागर से घिरा हुआ यही द्वीप (भरतखण्ड) है–

इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान् ।
नागद्वीपस्तथा सौम्यो गन्धर्वस्तवश वारुणः।
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः।।

–ब्रह्म पुराण, 27.15–16; विष्णु पुराण, 2.3.6–7; मार्कण्डेय महापुराण, 54.6–7; वायुपुराण, 45.79–80; मत्स्य पुराण, 114. 8–9; वामन पुराण, 13.9–10; स्कन्द पुराण, 7.1.172.7

भरत खण्ड के अन्तर्गत 18 राज्य हैं–

भरत खण्ड स्याषदशराज्य स्थान.......

–भविष्य महापुराण, प्रतिसर्गपर्व, 3.2 का शीर्षक सम्राट् विक्रमादित्य (57 ई.पू.–36 ई.) के स्वर्ग में चले जाने के बाद (भरतखण्ड में) 18 राज्यों की स्थापना हुई थी–

स्वर्गते विक्रमादित्ये राजानो बहुधोभवन।
तथाषदश राज्यानितेषां नामानि मे शृणु।।

–वही, 3.4.9

भरत खण्ड के ग्रामों की संख्या 96,72,36,000 कही गयी है–

एवं भरतखण्डस्य षणवत्येवकोटयः।
द्वा सप्ततिस्तथालक्षाः पत्तनानांप्रकीर्तिताः।।

–स्कन्द महापुराण, माहेश्वर खंड, कुमारिका खंड, 33.93

(भरतखण्ड में भी) पूर्व और पश्चिम समुद्र के बीच, तथा उन्हीं दोनों (हिमालय और विन्ध्याचल) पर्वतों के बीच में स्थित भूखण्ड को ही 'आर्यावर्त' कहा जाता है–

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
यतोरेवान्तर गियौरार्यावर्तं विदुर्बुधः।।

– भविष्यपुराण, ब्राह्मपर्व 7.65; मनुस्मृति, 2.22

पूर्वापरयोः समुद्रयोर्हिमवद्विन्ध्योश्चान्तरमार्यावर्तः

– राजशेखर (10वीं शताब्दी) कृत काव्यमीमांसा, 93.17

स्पष्ट है कि 'जम्बूद्वीप', 'भरतखण्ड' और 'आर्यावर्त' भारतवर्ष के पर्यायवाची नाम नहीं हैं, अपितु जम्बूद्वीप के 9 खण्डों में से एक खण्ड को 'भारतवर्ष', भारतवर्ष के 9 खण्डों में से एक को 'भरतखण्ड' और भरतखण्ड के एक भाग को 'आर्यावर्त' कहा गया है। हिंदुओं के परम्परा से चले आ रहे 'संकल्पपाठ' में भी उल्लेख है–

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशांतर्गते ब्रह्मावर्तेक पुण्यप्रदेशे...।

अर्थात् ....जम्बूद्वीप के भारतवर्ष के भरतखण्ड के आर्यावर्त देश के अंतर्गत ब्रह्मावर्त नामक पुण्य–प्रदेश में......।

ब्रह्म और विष्णुमहापुराणों में कहा गया है–

अत्रापि भारतं श्रेष्ठजम्बूद्वीपे महामुने

– ब्रह्म महापुराण, 19.23; विष्णु महापुराण, 2.3.22

अर्थात् इस जम्बूद्वीप में भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है।

आर्यावर्त में भी सरस्वती और दृषद्वती (घाघरा)– इन दो नदियों के मध्य स्थित देवनिर्मित भू–भाग (जो बिजनौर से लेकर प्रयाग तक और उत्तर में नैमिषारण्य तक फैला है) को 'ब्रह्मावर्त' कहा गया है–

सरस्वतीदृषद्वत्योर्देव नद्योर्यदन्तरम्।
तं देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते।।

–भविष्य महापुराण, ब्राह्मपर्व, 7.60;

वही, 181.40; मनुस्मृति, 2.17

भविष्य महापुराण की प्राचीन प्रतियों में 'हिंदुस्थान' शब्द का स्पष्ट उल्लेख है–

'हिंदुस्थानमिति ज्ञेयं राष्ट्रमार्यस्य चोत्तमम्।

(भविष्यमहापुराण, प्रतिसर्गपर्व, 3.2.20)

अर्थात्, आर्यों का उत्तम राष्ट्र 'हिंदुस्थान'– इस नाम से जानना चाहिए।

'बार्हस्पत्य शास्त्र' में भी उल्लेख आया है–

'हिमालयं समारभ्य यावदिन्दु सरोवरम्।
तं देवनिर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते।।'

अर्थात्, हिमालय और इन्दु सरोवरकृ इन दो स्थानों के मध्य स्थित देवनिर्मित देश को 'हिंदुस्थान' कहा जाता है।

'बार्हस्पत्य शास्त्र' का उल्लेख महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत (शान्तिपर्व, 56.38) में आया है–

'बार्हस्पत्ये च शास्त्रे च श्लोके निगदितः पुरा।'

अर्थात्, ...इसी बात के समर्थन में बार्हस्पत्यशास्त्र का एक प्राचीन श्लोक पढ़ा जाता है.....।

महाभारत का रचनाकाल पौराणिक–ज्योतिषीय काल गणनानुसार 3076–3073 ई.पू. है। महाभारत में 'बार्हस्पत्यशास्त्र' के उल्लेख से स्पष्ट है कि 'बार्हस्पत्यशास्त्र' महाभारत से भी प्राचीन ग्रन्थ है। और बार्हस्पत्यशास्त्र में 'हिंदुस्थान' शब्द आने का तात्पर्य है कि 'हिंदू' शब्द अत्यन्त प्राचीन है, अर्वाचीन नहीं, जैसा कि अनेक देशी–विदेशी विद्वान् इसकी उत्पत्ति 'सिंधु' शब्द से मानते हैं।

विस्तृत वर्णन। दो अन्य वर्णन वेद में हैं–

(1) भा (ज्ञान का प्रकाश) में रत। इसका केन्द्र काशी था (काश = दीप्ति)।

(2) भारत का अग्नि या अग्रि (अग्रसेन) विश्व का भरण करता है, इसलिए इसे भरत कहा गया।

अमृत काल में विकसित भारत का संकल्प!

भारत के अमृतकाल में नये भारत के निर्माण में भारतीय विरासत, बलिदान, त्याग को स्मरण श्रद्धांजलि के लिए देश सहित उ0प्र0 के पवित्र शहीद स्थलों– परिवारों से पवित्र मिट्टी को एकत्रित करने का कार्य जारी है। धरती को हरित बनाने के संकल्प के साथ वृक्षारोपण हो रहा है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के कृष्णा इंजीनियरिंग कॉलेज (मोहननगर) से देशव्यापी कार्यक्रम 'मेरी माटी, मेरा देश' का शुभारंभ किया। शहीद मेजर मोहित शर्मा जी के निवास स्थान पर 'अमृत वाटिका' में पौधा रोपण कि इस कार्यक्रम के तहत हर घर से मिट्टी इकट्ठी की जाएगी। सांसद अपने क्षेत्र के हर गांव में अमृत वाटिका बनाएंगे, वहां से मिट्टी दिल्ली लाई जायेगी और इस मिट्टी से दिल्ली स्थित कर्तव्यपथ पर अमृत वाटिका बनाई जाएगी। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री श्री वीके सिंह, राज्य सभा संसद श्री अनिल अग्रवाल, राष्ट्रीय महासचिव श्री सुनील बंसल, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिसोदिया, जिलाध्यक्ष श्री दिनेश सिंघल और महानगर अध्यक्ष श्री संजीव शर्मा सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

हमारे लाखों कार्यकर्ता हर वार्ड में, हर गांव में, हर पंचायत में जहां भी स्वतंत्रता सेनानी हों, देश की सुरक्षा में हुए शहीद जवानों, समाज की रक्षा करते हुए शहादत देने वाले अन्य सुरक्षा बलों के जवानों के घर जाकर उनके परिजनों से मिलेंगे और उन्हें विश्वास दिलाएंगे कि वे अकेले नहीं हैं, सारा देश उनके साथ है।

श्री नड्डा ने कहा कि "मेरी माटी, मेरा देश" में आपकी उपस्थिति आपकी देश भक्ति के जज्बे को दिखाता है। "मेरी माटी, मेरा देश" एक आह्वान है कि हम आजादी के अमृतमहोत्सव वर्ष के बाद अमृतकाल में देश को विकसित भारत का संकल्प लेकर आगे बढ़ें। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें अपने राष्ट्र भक्तों को याद करना है और उनके बताये रास्ते पर आगे बढ़ने का संकलप लेना है।

भारत सरकार ने तय किया कि हमारे लाखों कार्यकर्ता हर वार्ड में, हर गाँव में, हर पंचायत में जहाँ भी स्वतंत्रता सेनानी हों, देश की सुरक्षा में हुए शहीद का परिवार हो, ऐसे पुलिस के जवान जिन्होंने समाज की रक्षा करते हुए शहादत दी हो, जो आतंकवाद लड़ते हुए शहीद हुए हों, उनके घर जाकर उनके परिजनों से मिलेंगे और उन्हें विश्वास दिलाएंगे कि वे अकेले न हीं हैं, सारा देश उनके साथ है। सभी शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के नाम की शिलापट्टिका हर वार्ड में लगानी है। आज मुझे शहीद मेजर मोहित शर्मा जी के निवास स्थान पर गया और उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शहीद मेजर मोहित शर्मा जी ने 2009 में कुपवाड़ा में आतंक वादियों से लड़ते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था।

श्री नड्डा ने कहा कि यह भीतय किया गया है कि हर वार्ड में, हर

गाँव में, हर पंचायत में, हर नगर पालिका में, हर नगर पंचायत में 75 वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे ताकि अपने—आपको पर्यावरण से जोड़ा जाए। मैंने भी आज पांच घरों में जाकर एक—एक चुट की मिट्टी और चावल के दो दाने उनके घरों से ली, इसे हर वार्ड में कलश में एकत्रित करना है। इसके बाद यह कल शहर वार्ड से म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन और कमिटी तक पहुंचेगा। वहां से यह प्रदेश की राजधानी पहुंचेगी। फिर 7500 ब्लॉक्स और 500 म्युनिसिपिलैटी से 8000 कलश लेकर कार्यकर्ता अक्टूबर के अंत में दिल्ली के कर्तव्य पथ पर पहुंचेंगे। वहां आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हमें शपथ दिलाएंगे कि इस कलश की माटी की सौगंध कि हम देश की रक्षा, सुरक्षा के लिए और अमृतकाल में विकसित राष्ट्र बनाने में हम कोई कोर—कसर नहीं छोड़ेंगे। इसके बाद नेशनल वॉर मेमोरियल के समीप एक बहुत बड़ी अमृत वाटिका बनेगी और उसमें देश भर से लाये गए 8000 पौधे लगाए जाएंगे। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को आगे ले जा रहे हैं जब कि मुंबई में इकट्ठे हुए लोग परिवार को आगे ले जाने के प्रयास में हैं। लालू यादव जी को तेजस्वी यादव की चिंता है, अखिलेश यादव को अपने परिवार की चिंता है, परिवार मोह के कारण शरद पवार जी की पार्टी टूटी। ममता दीदी का तो परिवार प्रेम ऐसा है कि पीसी को भाई पोपसंद है। ममता दीदी के लिए पश्चिम बंगाल प्राथमिकता नहीं है बल्कि भतीजा महत्वपूर्ण है। इन दलों में परिवार के बाहर कोई दिखता ही नहीं है। राजद में तो लालू यादव, राबड़ी यादव, तेजस्वी यादव, तेज प्रताप यादव, मीसा भारती— कोई परिवार के बाहर दिखता है क्या ? ये अपने परिवार का अस्तित्व बचाने के लिए इकट्ठे हो रहे हैं। कोई रेलवे में जमीन के बदले नौकरी के घोटाले में फंसा है, कोई चारा घोटाले में, कोई नेशनल हेराल्ड घोटाले में। माँ—बेटे दोनों बेल पर चल रहे हैं। मतलब मुंबई में इकट्ठे सारे दल भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए हैं। मनीष सिसोदिया आज कल कहाँ हैं दृ यह सबको पता है। अरविंद केजरीवाल को नींद नहीं आर ही। इन्हें दिल्ली या देश से कोई मतलब नहीं है, अपने स्वार्थ से मतलब है। ये सारे के सारे तुष्टिकरण की राजनीति के पोषक बन गए हैं। कर्नाटक में मुस्लिम के लिए धर्म के नाम पर अलग से कोटा का प्रावधान किया जा रहा है। ऐसे लोगों को घर बिठाइये और देश के विकास के प्रतिसमर्पित आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और एनडीए की सरकार बनाइये। आइये, हम सब देश के संकल्पों को पूरा करने का प्रण लें और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को विकास पथ पर अग्रसर बनाएं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने गोरखपुर से तो प्रदेश अध्यक्ष चौ0 भूपेन्द्र सिंह जी ने लखनऊ से मिट्टी एकत्रित किया। इस अवसर पर योगी जी ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, '2047 मेंजब देश आजादी का शताब्दी महोत्सव महोत्सव मना रहा होगा, तब हर राष्ट्रभक्त भारतीय के मन में भारत को समर्थ, सशक्त और दुनिया की सबसे बड़ी महाशक्ति के रूप में देखने की इच्छा होगी। हर भारतीय देश को दुनिया का नेतृत्व करते हुए देखने की इच्छा रखता है।'

सीएम योगी ने ये बातें शुक्रवार को गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में 'मेरी माटी, मेरा देश' कार्यक्रम के दौरान कहीं। उन्होंने भाजपा महानगर इकाई के अध्यक्ष राजेश गुप्ता को गोरखनाथ मंदिर परिसर की पवित्र मिट्टी अमृत कलश में भरकर सौंपी।

1500 स्थलों की मिट्टी से भरे जाएंगे कलश

प्रदेश भर के हर नगर निकाय और हर विकासखंड से अमृतकलश एकत्र होकर लखनऊ और फिर दिल्ली के लिए जाएंगे। लखनऊ में जहां आजादी के अमृत कलश की स्थापना हुई है, उसी पवित्र स्थल पर एक अमृत कलश वाटिका स्थापित हो रही है जहां प्रदेश भर से संग्रहित कलश रखे जाएंगे। अमृत कलश वाटिका में 825 विकास खंडों समेत करीब 1500 स्थलों से एकत्रित मिट्टी भरे कलश रखे जाएंगे।

पूरे प्रदेश में सभी सीनों पर सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधियों, वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के द्वारा इस अनुष्ठान को पूरा किया जा रहा है।

हर तम के माथे पर हमने, सौ–सौ दीप जलाए हैं

कोटिशः नमन्!

स्वर्गीय वीरेश्वर द्विवेदी जी

आप राष्ट्रधर्म पत्रिका के पूर्व सम्पादक, संघ के वरिष्ठ प्रचारक, विहिप के पूर्व केन्द्रियमंत्री रहे। विगत 4 सितम्बर को लखनऊ में आपका निधन हो गया था। इस अपूर्णीय क्षति पर संघ परिवार ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया।

तिमिराच्छादित राष्ट्र गगन में भक्ति-चाँद चमकाये हैं।
हर तम के माथे पर हमने, सौ-सौ दीप जलाए हैं।।
गहन अंधेरा तना हुआ था, भारत माँ के आंगन में।
हीन भावना भरी हुई थी, जन-जन के अंतर्मन में।।
'हिंदू' कहने में नेतागण, लज्जा अनुभव करते थे।
ऊँचे-ऊँचे मंचों तक से, यह 'बेशर्मी' करते थे।।
इसी समय पर प्रभुणा-प्रेषित, आए केशव माली।
हिन्दु-जागरण की हितकारिणि, फुलबगिया बो डाली।।
मरहम-पट्टी नहीं, राष्ट्र के रक्त दोष ही परखे।
हिन्दु-राष्ट्र की मूल बीमारी, की तह में जा बैठे।।
केशव की है मूल कल्पना, मंत्र-बीज था बोया।
माधव ने की वृहत् योजना, बरगद सा फैलाया।।
मधुकर की समता-समरसता, फूल रही फुलवारी।
रज्जू भैया स्नेह-रज्जु से, बाँधे दे-दे तारी।।
कुप्पाहाली का बुद्धि-सुदर्शन, पड़ता सब पर भारी।
मोहन की मोहकता-सम्मुख, झूम रहे नर नारी।।
बाबा आपटे अनथक यात्री, कहते अकथ कहानी।
दादाराव परमार्थ आग उगलते, बेढब इंग्लिश वाणी।।
जामगड़े को भूल न जायें, वे भी थे ध्रुव धारी।
अपनी शक्ति-बुद्धि ले निकले, धरकर धीरज भारी।।
भाऊराव का 'उत्तर'- धावा, यादव 'दक्षिण' नापे।
भारत के चप्पे-चप्पे पर, भगवा जाकर रोपे।।
माधव मुले,भिषीकर ने था, पंजाब पग-पग धाया।
उधर राम सिंह पूरब जाकर, मारा छप्पर छापा।
भास्कर कलम्बी, रंगा हरि ने, केरल को मथ डाला।
कम्युनिस्टी-षडयंत्र चूल को, एक-एक घिस डाला।।
सूर्य नारायण ने तमिलनाडु में, राष्ट्र-मंत्र संचार किया।
धर्म-विरोधी धरती में ध्वज, फहर-फहर फहरा दिया।।
विविध क्षेत्र में डटे जुझारू, सेनापति गरजे हैं।
दसों दिशाओं में जा-जाकर बलशाली तरजे हैं।।
दादा आपटे, ठेंगड़ी, रानडे, सिंघल, मोरोपंत सरीखे।
सौंपा हुआ मोर्चा जीता, नीलाम्बर में चम-चम चमके।।
भए प्रगट कृपाला, 'दीन दयाला' भारत माँ-हितकारी।
हर्षित महतारी, अटल बिहारी, सुंदर सिंह भण्डारी।।
नेता आडवाणी अद्भुत ज्ञानी, धारा नई बहा दी।
राजनीति की सार्थकता में, जान नई थी डाली।।
नाना-सम 'न' 'न' करने वाले, ऐसे भी सम्मानी।
कुशा ठाकरे जैसे कर्मठ, जोशी से भी अभिमानी।।
दुनिया के कोने-कोने में, लगते जय जय कारे।
पीछे-पीछे भीड़ मचलती, मोदी मोदी नारे।।
खड्गधारी हाथ में माँ का मुकुट, जग देखता है।
पार्थ का गाण्डीव का शर, लक्ष्य वांछित वेधता है।।
राष्ट्रवादी प्रखरता की, सप्त स्वर झंकार है।
शत्रु को ललकारती, घन गर्जनी हुंकार है।।
नेस्त्रादामस-भविष्य वाचन, सत्य सिद्ध होता है।
भारत के पश्चिम सागर से, विश्व गुरु उगता है।।
सेवा क्षेत्र में देशपाण्डे, यज्ञ कुंड से धधक रहे।
वनवासी जीवन उन्नति के, ज्योति-पुंज से दमक रहे।।
कुष्ठ-निवारक, चाँपा जैसे, विविध लक्ष्य ललकार रहे।
मानव मन की विश्व वेदना,विगलित कर परिष्कार रहे।।
'एकल' की है वज्र योजना, लखटकिया से भारी।
सिंघल ने 'ब्रह्मास्त्र' बताया इसे अनेकों बारी।।
मदनदास की महत् कल्पना, छात्रशक्ति प्रकटा दी।
योजना, रचना, अभियानों से युवाक्रांति करवा दी।।
इन सारे संकल्पों ने मिल, सपना है साकार किया।
राष्ट्रदेव के अंग-अंग में, नवजीवन संचार किया।।
पुनर्जागरण शंखनाद से, धरती अंबर गूँजा रहे।
राष्ट्रकाय की रग-रग में हैं, नवयुग का संचार कर रहे।।
हमें भरोसा भागवत्-वाणी, दिग-दिगंत में गूँजेगी।
हिंदू राष्ट्र की कीर्ति पताका, युग युग तक फहरेगी।।

(स्वर्गीय. वीरेश्वर द्विवेदी जी ने यह कविता जुलाई 2023 में अस्पताल के बिस्तर पर ही लिखी थी।)

नरेन्द्र मोदी

भारत की बढ़ती समृद्धि

ये विश्लेषण उन बातों पर प्रकाश डालते हैं जिससे हमें बहुत खुशी होनी चाहिए कि भारत न्यायसंगत और सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। मैंने इस शोध कार्यो से कुछ दिलचस्प अंश साझा करने के बारे में सोचा:

हाल ही में मुझे दो शोध कार्य मिले, जो भारत की अर्थव्यवस्था के बारे में नागरिकों को रुचिकर लगेंगे: एक एसबीआई रिसर्च से और दूसरा प्रसिद्ध पत्रकार श्री अनिल पद्मनाभन के माध्यम से।

ये विश्लेषण उन बातों पर प्रकाश डालते हैं जिससे हमें बहुत खुशी होनी चाहिए कि भारत न्यायसंगत और सामूहिक समृद्धि प्राप्त करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति कर रहा है। मैंने इस शोध कार्यो से कुछ दिलचस्प अंश साझा करने के बारे में सोचा:

एसबीआई के शोध ने बताया है (आईटीआर रिटर्न के आधार पर) औसत आय में पिछले 9 वर्षों में सराहनीय बढ़ोतरी हुई है, जो कि वित्त वर्ष 14 के 4.4 लाख रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 23 में 13 लाख रुपये हो गई है।

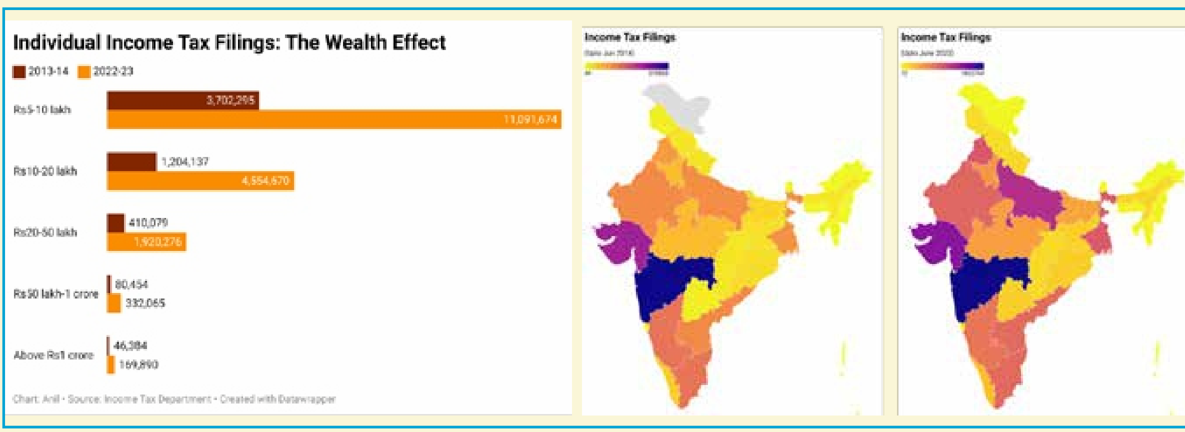

श्री पद्मनाभन का आईटीआर डेटा का अध्ययन विभिन्न आय वर्गों में कर आधार के विस्तार की ओर इशारा करता है।

प्रत्येक वर्ग में टैक्स फाइलिंग में न्यूनतम तीन गुना वृद्धि देखी गई है, कुछ वर्गों में लगभग चार गुना वृद्धि भी हासिल की गयी है।

इसके अलावा, यह शोध राज्यों में आयकर दाखिलों में वृद्धि के संदर्भ में सकारात्मक प्रदर्शन पर प्रकाश डालता है। 2014 और 2023 के बीच आईटीआर फाइलिंग की तुलना करने पर, डेटा सभी राज्यों में बढ़ी हुई कर भागीदारी की एक आशाजनक तस्वीर पेश करता है।

उदाहरण के लिए आईटीआर डेटा विश्लेषण से पता चलता है कि आईटीआर दाखिल करने के मामले में उत्तर प्रदेश शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों में से एक बनकर उभरा है। जून, 2014 में उत्तर प्रदेश में 1.65 लाख आईटीआर फाइल हुए थे, लेकिन जून 2023 तक, यह आंकड़ा बढ़कर 11.92 लाख हो गया है।

एसबीआई रिपोर्ट भी एक उत्साहजनक तस्वीर सामने लाती है जिसमें बताया गया है कि हमारे छोटे राज्यों और वह भी पूर्वोत्तर से अर्थात् मणिपुर, मिजोरम और नागालैंड ने पिछले 9 वर्षों में आईटीआर फाइलिंग में 20% से अधिक की सराहनीय वृद्धि देखी है।

इससे पता चलता है कि न केवल आय बढ़ी है, बल्कि अनुपालन भी बढ़ा है और यह हमारी सरकार में लोगों के विश्वास की भावना का प्रकटीकरण है।

ये निष्कर्ष न केवल हमारे सामूहिक प्रयासों को दर्शाते हैं, बल्कि एक राष्ट्र के रूप में हमारी क्षमता को भी दिखाता है। हमारी बढ़ती समृद्धि राष्ट्रीय प्रगति के लिए शुभ संकेत है। निस्संदेह, हम आर्थिक समृद्धि के एक नए युग के मुहाने पर खड़े हैं और 2047 तक अपने 'विकसित भारत' के सपने को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

संसद के दोनों सदनों से कुल 23 विधेयक पारित

संसद का मानसून सत्र, 2023 जो 20 जुलाई, 2023 को शुरू हुआ, 11 अगस्त, 2023 को अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया। सत्र में 23 दिनों की अवधि में संसद 17 बार बैठी। सत्र के दौरान लोकसभा में 20 विधेयक और राज्यसभा में 5 विधेयक पेश किये गये। लोकसभा में 22 बिल और राज्यसभा में 25 बिल पास हुए। लोकसभा और राज्यसभा की अनुमति से क्रमशः एक–एक विधेयक वापस ले लिया गया। सत्र के दौरान संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित विधेयकों की कुल संख्या 23 है

- **सत्र के दौरान दोनों सदनों द्वारा पारित प्रमुख विधेयक निम्न हैं:**
- सिनेमैटोग्राफ (संशोधन) विधेयक, 2023 का उद्देश्य फिल्म पायरेसी की जांच करने, प्रमाणन की आयु–आधारित श्रेणियां पेश करने और मौजूदा अधिनियम में अनावश्यक प्रावधानों को हटाने के लिए अधिनियम में सक्षम प्रावधानों को शामिल करके प्रदर्शन के लिए फिल्मों को मंजूरी देने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी और बदले हुए समय के अनुरूप बनाना है।
- **संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (तीसरा संशोधन)** विधेयक, 2023 हिमाचल प्रदेश में अनुसूचित जनजाति की सूची में सिरमौर जिले के ट्रांस गिरी क्षेत्र के हाटी समुदाय को शामिल करने का प्रयास करता है।
- **संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (पांचवां संशोधन)** विधेयक, 2023 भुइयां और भुयान समुदायों को भरिया भूमिया समुदाय के पर्यायवाची के रूप में शामिल करने का प्रयास करता है। इसमें छत्तीसगढ़ में पंडो समुदाय के नाम के तीन देवनागरी संस्करण भी शामिल हैं।
- **बहु–राज्य सहकारी सोसायटी (संशोधन) विधेयक, 2023** का उद्देश्य (प) मौजूदा कानून को पूरक करके और निन्यानबेवें संवैधानिक संशोधन के प्रावधानों को शामिल करके बहु–राज्य सहकारी समितियों में शासन को मजबूत करना, पारदर्शिता बढ़ाना, जवाबदेही बढ़ाना, चुनावी प्रक्रिया में सुधार करना आदि है। (पप) निगरानी तंत्र में सुधार करना और बहु–राज्य सहकारी समितियों के लिए व्यवसाय करने में आसानी सुनिश्चित करना।
- **जैविक विविधता (संशोधन) विधेयक, 2023** का उद्देश्य (प) औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करके जंगली औषधीय पौधों पर दबाव कम करना; (पप) भारतीय चिकित्सा पद्धति को प्रोत्साहित करना; (पपप) जैविक विविधता पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन और इसके नागोया प्रोटोकॉल के उद्देश्यों से समझौता किए बिना भारत में उपलब्ध जैविक संसाधनों का उपयोग करते हुए अनुसंधान, पेटेंट आवेदन प्रक्रिया, अनुसंधान परिणामों के हस्तांतरण की तेजी से ट्रैकिंग की सुविधा प्रदान करना; (पअ) कुछ प्रावधानों को अपराधमुक्त करना; (अ) राष्ट्रीय हित से समझौता किए बिना अनुसंधान, पेटेंट और वाणिज्यिक उपयोग सहित जैविक संसाधनों की श्रृंखला में अधिक विदेशी निवेश लाना है।
- **खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन विधेयक,** 2023 अन्वेषण लाइसेंस शुरू करने और परमाणु खनिजों की सूची से कुछ खनिजों को हटाने के लिए खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 में संशोधन करना चाहता है।
- **अपतटीय क्षेत्र खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन विधेयक,** 2023 एक पारदर्शी और गैर–विवेकाधीन प्रक्रिया के माध्यम से परिचालन अधिकारों के शीघ्र आवंटन को सक्षम करने के लिए प्रतिस्पर्धी बोली द्वारा नीलामी के माध्यम से निजी क्षेत्र को उत्पादन पट्टा देने का प्रावधान करता है। इसके अलावा, विधेयक का उद्देश्य खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 की अन्य विशेषताओं को अपनाना, जैसे खनन प्रभावित व्यक्तियों के लिए ट्रस्ट की स्थापना और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना, विवेकाधीन नवीनीकरण की प्रक्रिया को हटाना और पचास वर्षों की एक समान पट्टा अवधि प्रदान करना, समग्र की शुरुआत लाइसेंस, क्षेत्र सीमा का प्रावधान, समग्र लाइसेंस या उत्पादन पट्टे का आसान हस्तांतरण, आदि है।
- **वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2023** का उद्देश्य अन्य बातों के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की भूमि में अधिनियम की प्रयोज्यता को स्पष्ट करके और अधिनियम के तहत अनुमोदन की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करके वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 में संशोधन करना है।
- **जन विश्वास (प्रावधानों में संशोधन) विधेयक, 2023** छोटे अपराधों को अपराधमुक्त करने के अलावा, विधेयक अपराध की गंभीरता के आधार पर मौद्रिक दंड के युक्तीकरण की परिकल्पना करता है, जिससे विश्वास–आधारित शासन को बढ़ावा मिलता है। दस फीसदी की बढ़ोतरी की प्रस्ताव में एक और नवीनता शामिल है। विधेयक के कानून बन जाने पर, हर तीन साल की समाप्ति के बाद, जुर्माने और दंड की न्यूनतम राशि लगाई जाएगी
- **जन्म एवं मृत्यु का पंजीकरण (संशोधन) विधेयक, 2023** पिछले पांच दशकों के दौरान समाज में प्रगतिशील परिवर्तनों को समायोजित करने, पंजीकरण प्रक्रिया को लोगों के अनुकूल बनाने और पंजीकृत जन्म और मृत्यु के

डेटाबेस का उपयोग करके राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अन्य डेटाबेस को अपडेट करने का प्रयास करता है।

- **मध्यस्थता विधेयक, 2023** वाणिज्यिक या अन्यथा विवादों के समाधान के लिए मध्यस्थता, विशेष रूप से संस्थागत मध्यस्थता को बढ़ावा देने और सुविधाजनक बनाने, मध्यस्थता निपटान समझौतों को लागू करने, मध्यस्थों के पंजीकरण के लिए एक निकाय प्रदान करने और उससे जुड़े या उसके आनुषंगिक मामलों के लिए सामुदायिक मध्यस्थता को प्रोत्साहित करने और ऑनलाइन मध्यस्थता को स्वीकार्य और लागत प्रभावी प्रक्रिया बनाने का प्रयास करता है।
- **अंतर–सेवा संगठन (कमांड, नियंत्रण और अनुशासन) विधेयक, 2023** सेना अधिनियम, अंतर–सेवा संगठनों के कमांडर–इन–चीफ या ऑफिसर–इन–कमांड को सशक्त बनाने का प्रयास करता है। यह ऐसा सेना अधिनियम, 1950, नौसेना अधिनियम, 1957 और वायु सेना अधिनियम, 1950 के अधीन व्यक्तियों के संबंध में, जो अनुशासन बनाए रखने और अपने कर्तव्यों के उचित निर्वहन के लिए उसकी कमान के तहत सेवा कर रहे हैं या उससे जुड़े हुए हैं, के तहत करता है।
- **भारतीय प्रबंधन संस्थान (संशोधन) विधेयक, 2023** (i) आईआईटी और राष्ट्रीय महत्व के अन्य संस्थानों को नियंत्रित करने वाले अधिनियमों के साथ आईआईएम अधिनियम के संरेखण का प्रावधान करना चाहता है। (ii) आईआईएम अधिनियम, 2017 की अनुसूची में एनआईटीआईई, मुंबई को शामिल करना और एनआईटीआईई, मुंबई का नाम बदलकर आईआईएम मुंबई करना।
- **राष्ट्रीय दंत चिकित्सा आयोग विधेयक, 2023** देश में दंत चिकित्सा के पेशे को विनियमित करने, गुणवत्तापूर्ण और किफायती प्रदान करने का प्रयास करता है; दंत चिकित्सा शिक्षा, उच्च गुणवत्ता वाली मौखिक स्वास्थ्य देखभाल को सुलभ बनाना और उससे जुड़े या उसके आकस्मिक मामलों के लिए।
- **राष्ट्रीय नर्सिंग और मिडवाइफरी आयोग विधेयक, 2023** का उद्देश्य नर्सिंग और मिडवाइफरी पेशेवरों द्वारा शिक्षा और सेवाओं के मानकों के विनियमन और रखरखाव, संस्थानों का मूल्यांकन, राष्ट्रीय रजिस्टर और राज्य रजिस्टरों का रखरखाव और पहुंच, अनुसंधान में सुधार के लिए एक प्रणाली का निर्माण करना है। इसका उद्देश्य नवीनतम वैज्ञानिक उन्नति का विकास करना और अपनाया जाना और उससे जुड़े या उसके आनुषंगिक मामलों के लिए भी कार्य करना है।
- **संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश (संशोधन) विधेयक, 2023** में छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जाति की सूची में क्रमांक 33 में महार, मेहरा, मेहार के पर्यायवाची शब्द के रूप में महरा, महारा समुदाय को शामिल करने की मांग की गई है।
- **अनुसंधान राष्ट्रीय रिसर्च फाउंडेशन विधेयक, 2023** गणितीय विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और पृथ्वी विज्ञान, स्वास्थ्य और कृषि सहित प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता के लिए उच्च स्तरीय रणनीतिक दिशा प्रदान करने के लिए अनुसंधान राष्ट्रीय रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना करता है और मानविकी और सामाजिक विज्ञान के वैज्ञानिक और तकनीकी इंटरफेस, ऐसे अनुसंधान के लिए और उससे जुड़े या उसके प्रासंगिक मामलों को बढ़ावा देने, निगरानी करने और आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करने के लिए कार्य करता है।
- **डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक, 2023** डिजिटल व्यक्तिगत डेटा के प्रसंस्करण को इस तरीके से प्रदान करने का प्रयास करता है जो व्यक्तियों के अपने व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा के अधिकार और वैध उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत डेटा को संसाधित करने की आवश्यकता, दोनों पर ध्यान देता है और उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक मामलों के लिए प्रावधान बनाता है।
- **तटीय एक्वाकल्चर प्राधिकरण (संशोधन) विधेयक, 2023** का उद्देश्य है: (A) अधिनियम के प्रावधानों को संशोधित करना ताकि तटीय क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण के मूल सिद्धांतों को कमजोर किए बिना हितधारकों पर नियामक अनुपालन बोझ को कम किया जाना; (B) अधिनियम के तहत अपराध (अपराधों) को अपराधमुक्त करना; (C) सभी तटीय जलकृषि गतिविधियों को इसके दायरे में लाने के लिए अधिनियम के दायरे का विस्तार करना; और (D) प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अधिनियम में कठिनाइयों और नियामक अंतरालों को दूर करना और व्यापार करने में आसानी की सुविधा प्रदान करना।
- **फार्मेसी (संशोधन) विधेयक, 2023** यह प्रावधान करना चाहता है कि कोई भी व्यक्ति जिसका नाम जम्मू और कश्मीर फार्मेसी अधिनियम, 2011 के तहत बनाए गए फार्मासिस्ट के रजिस्टर में दर्ज किया गया है या उक्त अधिनियम के तहत निर्धारित योग्यता (चिकित्सा सहायक/फार्मासिस्ट) रखता है, उक्त अधिनियम के अध्याय IV के तहत तैयार और बनाए गए फार्मासिस्ट के रजिस्टर में दर्ज किया गया माना जाएगा, बशर्ते कि फार्मेसी (संशोधन) अधिनियम, 2023 के प्रारंभ से एक वर्ष की अवधि के भीतर इस संबंध में आवेदन किया जाए। ऐसी फीस के भुगतान पर किया जा सकता है, उस तरीके से, जैसा कि केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर की सरकार और केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के प्रशासन द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

जन धन खातों की संख्या हुई 50 करोड़ से अधिक

कुल जन धन खातों में 56 प्रतिशत खाते महिलाओं के हैं तथा ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में 67 प्रतिशत खाते खोले गए

बैंकों द्वारा प्रस्तुत नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार 9 अगस्त, 2023 तक जन धन खातों की कुल संख्या 50 करोड़ से अधिक हो गई। इन खातों में से 56 प्रतिशत खाते महिलाओं के हैं और 67 प्रतिशत खाते ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में खोले गए हैं। इन खातों में जमा राशि 2.03 लाख करोड़ रुपये से अधिक है और लगभग 34 करोड़ रुपे कार्ड जारी किए गए हैं। पीएमजेडीवाई खातों में औसत बैलेंस 4,076 रुपये और 5.5 करोड़ से अधिक पीएमजेडीवाई खातों को डीबीटी का लाभ मिल रहा है।

उल्लेखनीय है कि वित्तीय समावेशन पर राष्ट्रीय मिशन, जोकि प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) के नाम से जाना जाता है, को 28 अगस्त, 2014 को शुरू किया गया था और इसने लगभग 9 वर्ष पूरे कर लिए हैं।

पीएमजेडीवाई योजना देश के वित्तीय परिदृश्य को बदलने में सफल रही है और वयस्कों को बैंक खातों की सुविधा प्रदान की गई। पीएमजेडीवाई की सफलता प्रौद्योगिकी, सहयोग और नवाचार के माध्यम से अंतिम छोर तक औपचारिक बैंकिंग प्रणाली को पहुंचाने के प्रयास के साथ योजना की व्यापक प्रकृति में निहित है।

पीएमजेडीवाई खाताधारकों को विभिन्न लाभ, जैसेकि न्यूनतम बैलेंस रखने की आवश्यकता के बिना बैंक खाता, 2 लाख रुपये के दुर्घटना बीमा वाला निःशुल्क रुपे डेबिट कार्ड और 10 हजार रुपये तक की ओवरड्राफ्ट फैसिलिटी प्रदान करता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनधन खातों में अर्जित महत्वपूर्ण उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की। पीआईबी इंडिया के एक ट्वीट के उत्तर में प्रधानमंत्री ने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि इनमें से आधे से अधिक खाते हमारी नारी शक्ति के हैं। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में खोले गए 67 प्रतिशत खातों के साथ हम यह भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि वित्तीय समावेशन का लाभ हमारे देश के हर कोने तक पहुंचे।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 14,903 करोड़ रुपये के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विस्तार को दी स्वीकृति

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 16 अगस्त को डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विस्तार को स्वीकृति दी। इसके लिए 14,903 करोड़ रुपये की धनराशि रखी गयी है। गौरतलब है कि नागरिकों को डिजिटल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का शुभारम्भ 1 जुलाई, 2015 को किया गया था। यह कार्यक्रम अत्यधिक सफल साबित हुआ है।

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के विस्तार से निम्न लाभ होंगे:

- फ्यूचर स्किल प्राइम कार्यक्रम के अंतर्गत 6.25 लाख सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों को पुनः कौशल से लैस किया जाएगा और उन्हें कौशल उन्नयन किया जाएगा।
- सूचना सुरक्षा और शिक्षा जागरूकता चरण कार्यक्रम के अंतर्गत 2.65 लाख व्यक्तियों को सूचना सुरक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जाएगा।
- यूनिफाइड मोबाइल एप्लिकेशन फॉर न्यू एज गवर्नेंस (उमंग) ऐप/प्लेटफॉर्म के अंतर्गत 540 अतिरिक्त सेवाएं उपलब्ध होंगी। भारत सरकार के निःशुल्क मोबाइल ऐप उमंग पर वर्तमान में 1,700 से अधिक सेवाएं पहले से ही उपलब्ध हैं।
- 9 और सुपर कंप्यूटर जोड़े जाएंगे
- राष्ट्रीय सुपर कम्प्यूटर मिशन के तहत 9 और सुपर कंप्यूटर जोड़े जाएंगे। यह पहले से तैनात 18 सुपर कम्प्यूटरों के अतिरिक्त हैं
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सक्षम बहु-भाषा अनुवाद उपकरण (वर्तमान में 10 भाषाओं में उपलब्ध) भाषिणी को सभी 22 अनुसूची और 8 भाषाओं में शुरू किया जाएगा
- राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क का आधुनिकीकरण किया जाएगा। इसमें 1,787 शिक्षण संस्थानों को जोड़ा जाएगा
- डिजीलॉकर के अंतर्गत डिजिटल दस्तावेज सत्यापन सुविधा मुहैया कराई जाएगी। अब यह सुविधा सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों तथा अन्य संगठनों के लिए भी उपलब्ध होगी
- **टियर 2/3 शहरों में 1,200 स्टार्टअप्स**
- टियर 2/3 शहरों में 1,200 स्टार्टअप्स को सहायता दी जाएगी।
- स्वास्थ्य, कृषि और टिकाऊ शहरों की आवश्यकताओं पर आधारित तीन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे।
- 12 करोड़ कॉलेज छात्रों के लिए साइबर-जागरूकता पाठ्यक्रम चलाये जाएंगे।
- उपकरणों के विकास और राष्ट्रीय साइबर समन्वय केंद्र के साथ 200 से अधिक साइटों के एकीकरण सहित साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में नई पहल शुरू की जाएगी।

उज्ज्वल भारत का स्पष्ट आह्वान !

पीटी उषा

भारत के 77वें स्वतंत्रता दिवस पर मैं एक महिला खिलाड़ी जिसने अपना जीवन उत्कृष्टता की दिशा में प्रयास करते हुए बिताया है, ने एक ऐसा क्षण देखा जो इतिहास में गूंजता रहेगा। प्रतिष्ठित लाल किले से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 10वें संबोधन ने हमारे राष्ट्र की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ का संकेत दियाकृ एक ऐसा मोड़ जो हमारी राह को नया आकार देने की शक्ति रखता है। एक गहन पर्यवेक्षक और भारत की प्रगति में भागीदार के रूप में, मैं कह सकती हूं कि यह भाषण एक बयान से कहीं अधिक था; यह एक स्पष्ट आह्वान था जिसने परिवर्तन को प्रतिध्वनित किया।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के शब्दों में जिस बात ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह थी उनकी प्रामाणिकता। उन्होंने हमें अदृश्य नागरिकों के रूप में संबोधित नहीं किया; उन्होंने हमसे 'परिवारजन' के रूप में बात की; अपने परिवार के सदस्यों के रूप में बात की। उत्साह के साथ उन्होंने कहा, ''मैं आपके बीच से आता हूं और आपके लिए जीता हूं। अगर मेरा कोई सपना है तो वह आपके लिए है। अगर मुझे पसीना आता है, तो यह आपके लिए है। इसलिए नहीं कि आपने मुझे यह जिम्मेदारी सौंपी है, बल्कि इसलिए कि आप मेरा परिवार हैं। आपके परिवार के सदस्य के रूप में मैं आपको किसी भी दुःख में नहीं देख सकता हूं, मैं आपके सपनों को टूटते हुए नहीं देख सकता।" यह घोषणा केवल भाषणबाजी नहीं थी; यह पारंपरिक नेतृत्व से एक अलग था, एक घोषणा थी कि सर्वोच्च पद सहानुभूति और संबंधों से बंधा हुआ था।

इस वर्ष का स्वतंत्रता दिवस आजादी का अमृत महोत्सव के समापन को चिह्नित करता है, एक उत्सव जो 12 मार्च, 2021 को साबरमती आश्रम से प्रधानमंत्री मोदीजी के उद्घाटन के साथ शुरू हुआ। यह उत्सव सिर्फ एक स्मरणोत्सव से कहीं अधिक है; यह एक पुनरुत्थान, एक 'अमृत काल' का प्रतीक है, जो नए दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण है, जिसका लक्ष्य 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलना है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने संबोधन में इतिहास, वर्तमान और भविष्य के धागों को सहजता से पिरोया। उन्होंने हमें याद दिलाया कि हमारे देश की भव्यता केवल ऐतिहासिक नहीं थी; यह लोकतंत्र की शक्ति और समान अवसर सुनिश्चित करने वाली अर्थव्यवस्था के वादे में भी है। उन्होंने हमसे आग्रह किया कि हम अपनी राह से विचलित न हों, क्योंकि दुनिया हमें लोकतांत्रिक इकाई और वैश्विक प्रगति के उदाहरण के रूप में देखती है।

उन्होंने उस क्षण को भी संजोया, जहां संभावना का दायरा वास्तविकता के दायरे से मिलाता है। भारत, गतिशील और दृढ़, वैश्विक मंच पर नवाचार और सहयोग के माध्यम से नेतृत्व करने के लिए तैयार है। हालांकि, यह भ्रष्टाचार से लड़ने, वंशवाद की राजनीति को खत्म करने और तुष्टीकरण के दाग को मिटाने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी की अटूट प्रतिबद्धता थी जो वास्तव में लोगों को पसंद आई। उन्होंने निर्विवाद उत्साह के साथ घोषणा की, "यह मेरी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता है कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना जारी रखूंगा। दूसरे, वंशवादी राजनीति दलों ने हमारे देश को नष्ट कर दिया है। इस वंशवादी व्यवस्था ने देश को जकड़ लिया था और देश के लोगों के अधिकार छीन लिए थे। तीसरी बुराई है तुष्टीकरण।" ये शब्द सिर्फ एक उद्घोषणा नहीं हैं; वे एक नागरिकों की पुकार हैं, हमारे देश की नियति को नया आकार देने के उनके दृढ़ संकल्प का प्रमाण हैं।

यह आह्वान राजनीतिक भाषणों से आगे निकल गया। इसने नेतृत्व के मूल सार को प्रतिध्वनित कियाकृ एकता और सामूहिक प्रयास का आह्वान; व्यक्तिगत लाभ से परे सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होने का आह्वान। जैसाकि उन्होंने हमें अपने वादों के लिए जवाबदेह बनने का आह्वान किया, उन्होंने सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी के महत्व पर जोर दिया। उनके शब्द इस बात की याद दिलाते थे कि प्रभावी शासन सिर्फ एक जिम्मेदारी नहीं है; यह हमारे इतिहास के प्रति प्रतिबद्धता, हमारे वर्तमान के लिए एक सेवा और हमारे भविष्य के लिए एक विरासत थी। जैसे ही हमारा देश 100वें वर्ष की ओर (2047 में 100वीं वर्षगांठ) अपनी यात्रा शुरू कर रहा है, ऐसे में प्रधानमंत्री मोदीजी के शब्द हमें सफलता की राह दिखाते हैं। संरचनात्मक सुधारों, आर्थिक विकास और सामाजिक समावेशिता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भारत की एक ऐसे राष्ट्र के रूप में तस्वीर पेश करती है जो विविधता, नवाचार और अपने नागरिकों की सामूहिक ताकत पर आगे बढ़ता है।

आने वाले समय में प्रधानमंत्री मोदीजी का संबोधन एक परिवर्तन बिंदु के रूप में हमारे सामने होगा है, एक ऐसा क्षण जब नेतृत्व एक दृष्टि और प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है, जिसे लाखों लोग एक साथ अपनाते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि किसी राष्ट्र की दिशा केवल नीतियों से तय नहीं होती; इसे अपने लोगों के जुनून, संकल्प और साझा सपनों से पिरोया गया है। एक खिलाड़ी के रूप में जो जीत के रोमांच को जानता है, मैं उनके शब्दों में एक साझा जीत देखता हूंकृ जो हमें एक साथ आने और एक उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए प्रेरित करती है।

(लेखिका ओलंपियन और राज्यसभा सांसद हैं)

मोदी स्टोरी

दूसरों के साथ प्रधानमंत्री मोदीजी का अनुकरणीय व्यवहार

— अन्नामलाई

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपनी विनम्रता और दूसरों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी समय-समय पर उदाहरण देते हैं कि उच्च पदों पर बैठे व्यक्तियों को कैसे आचरण करना चाहिए और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जहां प्रधानमंत्री श्री मोदी का अपने साथी नागरिकों के साथ सम्मानजनक व्यवहार स्पष्ट था। यहां तमिलनाडु से एक और उदाहरण है।

तमिलनाडु के प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री अन्नामलाई चेन्नई की एक घटना को याद करते हैं जब प्रधानमंत्री श्री मोदी प्रदेश के दौरे पर थे।

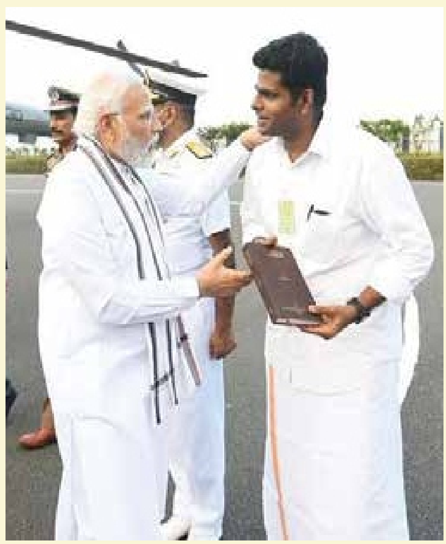

प्रधानमंत्री श्री मोदी चेन्नई में कुछ गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात कर रहे थे, तभी व्हीलचेयर पर बैठे दो वरिष्ठ नागरिक उनसे मिलने आये। उन्हें उस कमरे तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों को पार करना था, जहां प्रधानमंत्री श्री मोदी अन्य लोगों से मुलाकात कर रहे थे।

जब प्रधानमंत्री श्री मोदी को उनसे मिलने आये इन वरिष्ठ नागरिकों के बारे में बताया गया, तो दोनों बुजुर्ग सज्जनों को कोई परेशानी न हो इसके लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी स्वयं बाहर आये। प्रधानमंत्री श्री मोदी दोनों वरिष्ठ नागरिकों से गर्मजोशी से मिले, उनसे बातचीत की और उन्हें उचित सम्मान दिया। वहां मौजूद किसी को एक पल के लिए भी नहीं लगा कि देश के प्रधानमंत्री दो सज्जनों से मिल रहे हैं।

मुलाकात के अंत में दोनों बुजुर्गों ने प्रधानमंत्री श्री मोदी से आशीर्वाद लेने की कोशिश की, लेकिन सभी को आश्चर्य हुआ जब प्रधानमंत्री श्री मोदी ने उनके पैर छुए और उनका आशीर्वाद लिया। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी का एक और कार्य था, जिसने वहां मौजूद सभी लोगों के दिलों को छू लिया।

श्री अन्नामलाई का कहना है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी एक ऐसे नेता हैं जिनका हर कार्य पार्टी कार्यकर्ताओं और अन्य सभी लोगों के लिए एक सीख है। व्हीलचेयर पर बैठे दो वरिष्ठ नागरिकों के साथ उनका व्यवहार हमारे लिए सीखने लायक था और यह हमें यह भी बताता है, "शीर्ष पर बैठे व्यक्ति को दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।" ■

कमल पुष्प सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

कोमारगिरी कृष्ण मोहन राव

1960-1979
कृष्ण, नंदीगामा
जिला महामंत्री (संगठन)

नादिगामा शहर के श्री कोमारगिरी कृष्ण मोहन राव बाल स्वयंसेवक के रूप में रा.स्व. संघ के संपर्क में आए। बाद में, उन्होंने 1953-56 के दौरान अवनिगड्डा और नंदीगामा में संघ विस्तारक के रूप में अपने दायित्व का निर्वहन किया। इसके अलावा, उन्होंने 1967-75 के बीच कृष्णा जिले से श्रीकाकुलम जिले तक पार्टी के विस्तार के लिए काम किया। 1975 की आपातकालीन अवधि के दौरान उन्हें मीसा बंदी के रूप में 19 महीने तक जेल में रखा गया था। उन्होंने भूमि करों की वृद्धि के खिलाफ लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विशाखा इस्पात आंदोलन, विशेष आंध्र आंदोलन और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाले आंदोलन में भाग लिया। ■

मेरी माटी–मेरा देश अभियान उत्तर प्रदेश

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोड: UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
सितम्बर प्रथम 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।